http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/humBhojpuria/ https://www.facebook/com/humbhojpuriaa/

तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 अगस्त 2020

हम भोजपुरिआ

अभिनंदन हे रघुनंदन

सूचना

अगिला अंक से 'हम भोजपुरिआ' पत्रिका 'भोजपुरी जंक्शन' के नांव से निकली।

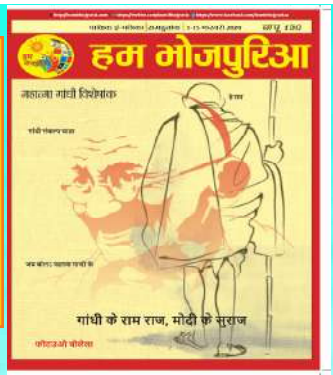

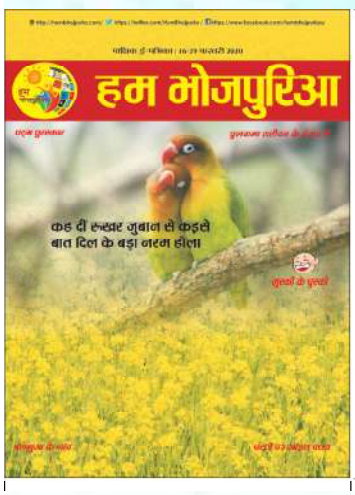

पढ़ीं भोजपुरी, लिखीं भोजपुरी, बोलीं भोजपुरी

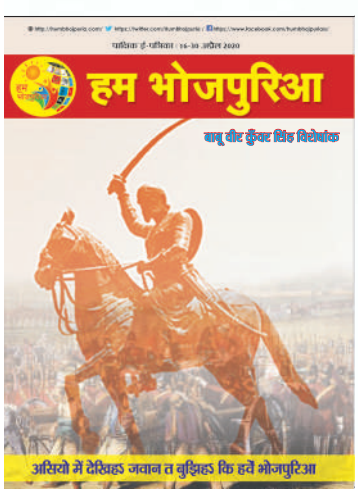

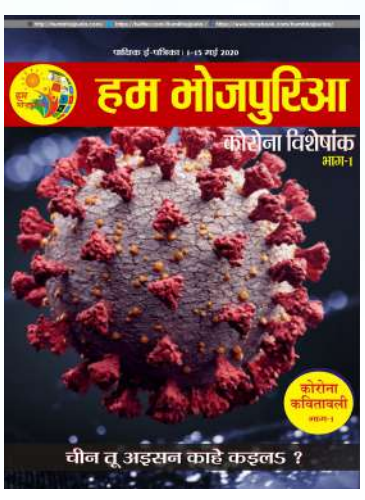

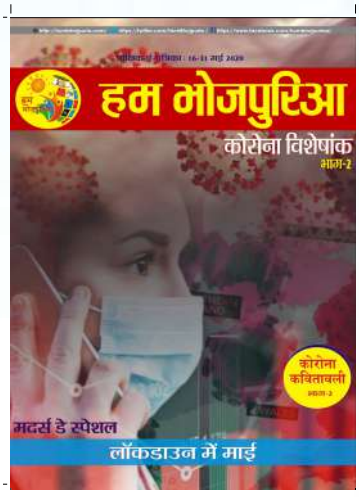

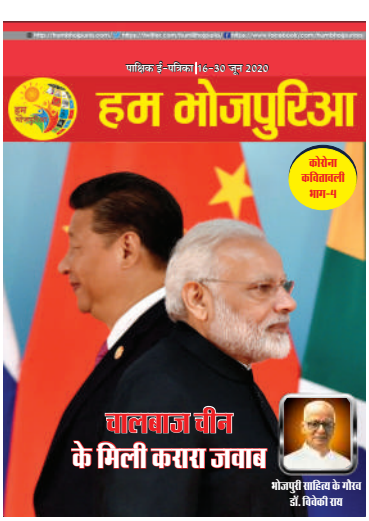

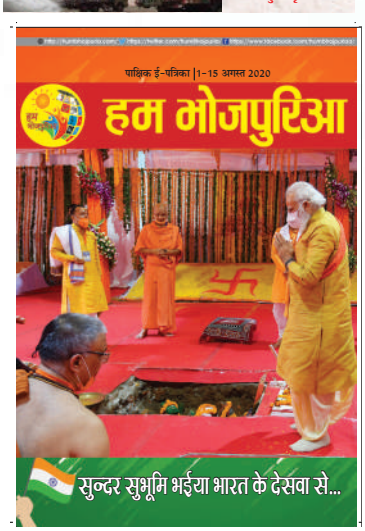

वर्षः 1, अंकः 13, 16-31 अगस्त, 2020

हम भोजपुरिआ

पाक्षिक ई-पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

समूह संपादक
रामबहादुर राय

संपादक
मनोज भावुक

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा, हितेश कुमार
जितेन्द्र सिंह, रविकांत कुमार,
परिधि जैन

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
डी- 160, सेक्टर- 63, नोएडा-201301,
फोन-0120-4804480,
humbhojpuria@hs.news
editor.humbhojpuria@hs.news

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/humBhojpuria
https://www.facebook.com/humbhojpuriaa/

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हऽ। एह से संपादकीय टीम के सहमति जरूरी नइखे।
संपादक- मनोज भावुक

मलिकाइन के पाती

एह अंक में

सुनीं सभे

बेंगलुरु में साजिश के आग 06

आवरण विशेष

(08) अभिनंदन हे रघुनंदन

भोजपुरी साहित्य के गौरव

पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

भुवनेश्वर प्र. श्रीवास्तव 'भानु'

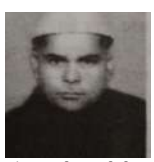

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव 'ढीबरी लाल'

गुरु बनारसी

रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'

राहगीर

दूधनाथ शर्मा 'श्याम'

दंडी स्वामी विमलानंद 'सरस्वती'

राम बचन लाल श्रीवास्तव

दिवंगत भोजपुरी सेवीः परिचय 14

जयंत विशेष

(22) मोती बी.ए.

सिनेमा

(29) भोजपुरी सिनेमा के क्रिएटिव टीम

भोजपुरी के आन-बान-शान ह 'हम भोजपुरिआ' पत्रिका

हम 'हम भोजपुरिआ' के नियमित पाठक हईं। हमरा एमे भोजपुरी माटी के भरपूर सोन्हाई मिलेला। ई जीवन के हर क्षेत्र के अपना में समेट के चलेला। ई बेशक एगो सम्पूर्ण पत्रिका के भूमिका निभा रहल बा। भोजपुरी साहित्य के विकास खातिर त ई पूर्ण समर्पित बा। पिछला सम्पादकीय 'हम भोजपुरिआ अउर भगवान राम' बड़ा ही उत्तम रहल। एकर नियमित पाठक अपना माई माटी से कबो अलग नइखे हो सकत।

एह पत्रिका के अउर उन्नति खातिर सहृदय शुभकामना बा।

अखिलेश्वर मिश्रा, वरिष्ठ साहित्यकार,
बेतिया, बिहार

भोजपुरी सिनेमा पर आधारित सामग्री शानदार बा

भोजपुरी साहित्य आ पत्रकारिता के दुनिया में 'हम भोजपुरिआ' जइसन पत्रिका के एगो अलग स्थान बा। एह पत्रिका के लगभग हर अंक अपना आप में संग्रह करे लायक बा। सबसे मजेदार बात त इ बा कि एह पत्रिका में एक साथ समसामयिक मुद्दा पर सारगर्भित लेख पढ़े के मिल जाला, जवन भोजपुरी भाषा में कहीं दोसरा जगह संभव नइखे, साथे-साथ ई पत्रिका भोजपुरिआ साहित्य के दिग्गज लोगन पर केन्द्रित आलेखन के जवन एगो श्रृंखला प्रस्तुत कइले बा उ बेजोड़ बा। भोजपुरी के सुधी पाठक, भोजपुरी के शोधार्थी आ केहू सामान्य पाठक खातिर संजो के रखे लायक बा।

संपादक महोदय के नियमित स्तम्भ... भोजपुरी सिनेमा पर आधारित इतिहास भी कम शानदार नइखे आ उहो समसामयिक, जइसे मदर्स डे पर भोजपुरी सिनेमा में माई, रक्षा बंधन पर भोजपुरी सिनेमा में रक्षा बंधन अउर स्वतंत्रता दिवस पर भोजपुरी सिनेमा में देशभक्ति ... जइसन शोध आलेख परोसल

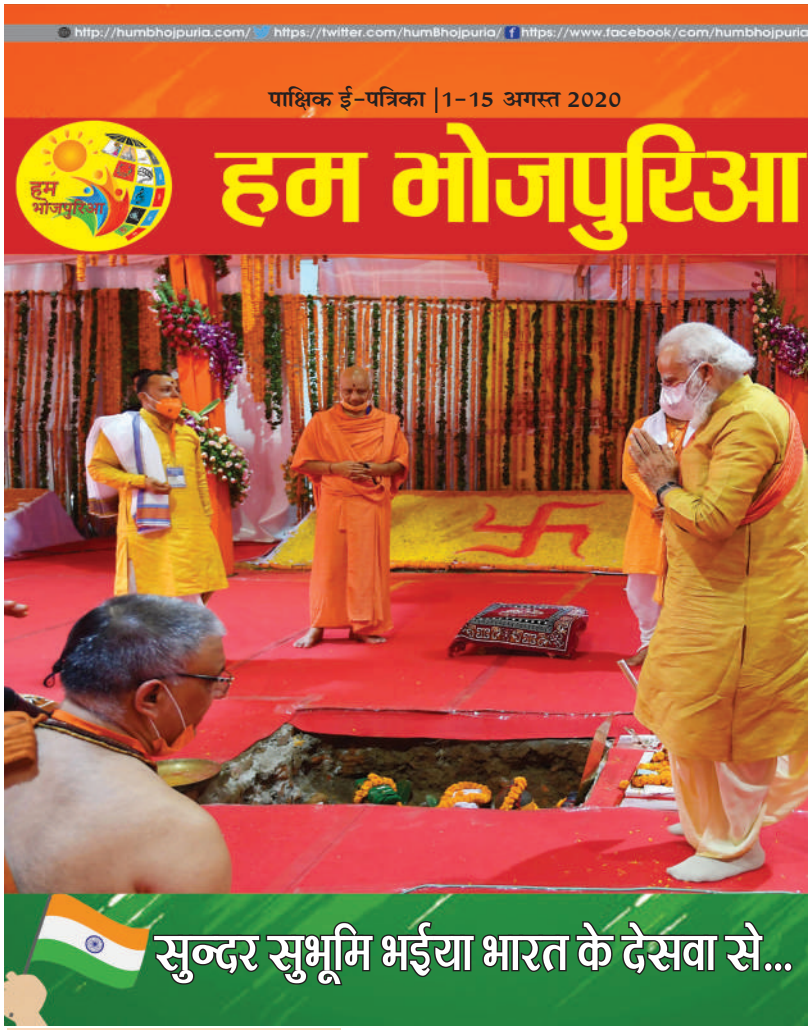

कमाल के बात आ सोच बा। जागरूक पाठक के रूप में हम ई आलेख सबसे पहिले पढ़ लेत रहीं, काहे कि ए विषय पर अब तक कहीं भी एतना बढ़िया सामग्री हमरा ना मिलल रहे। भोजपुरी सिनेमा में विकृति आइल बा लेकिन ओकर इतिहास शानदार रहल बा। उम्मीद बा ई सीरीज जारी रही।

पत्रिका के फलक के अउर विस्तृत करे खातिर युवा लोग ला एगो प्रश्न मंच के कॉलम शुरू कइल जा सकऽता जवना में 10 प्रश्न रही, जवाब देवे वाला पाठक खातिर कवनो पुरस्कार रखल जा सकता। निश्चित रूप से एसे पत्रिका के प्रसार बढ़ी आ लोकप्रिय भी होई। बाकी पूरी संपादकीय टीम के बहुत बहुत बधाई आ शुभकामाना बा।

राजेश कुमार सिंह, वरिष्ठ लाइब्रेरियन, अलख नारायण सिंह हाई स्कूल, एकमा, सारण, बिहार

संपादकीय

खुद के लवना के तरह रोज जरावत बानी...

पेट में आग त सुनुगल बा रहत ए 'भावुक'
खुद के लवना तरह रोज जरावत बानी

कोरोना महामारी जब फइलल त एकर पड़े वाला असर प खूब बतकूचन होत रहे...बाकिर जइसे-जइसे दिन बीते लागल बतकूचन खतम हो गइल आ ओकर असर साक्षात सामने लउके लागल। अब हालात ई बा कि कंपनी-कॉर्पोरेट में छंटनी के सीजन शुरू हो गइल बा, त कहीं नौकरी पेशा वाला लोग के वेतन दू-दू महीना के बकाया चले लागल बा। एक त कोरोना के डर ऊपर से पॉकिट में पइसा के अभाव। ई अइसन स्थिति बा जवना में मध्यवर्ग सबसे अधिका पिसाता। ऊ राशन खातिर भा अउरी कवनो खैरात में मिले वाला सुविधा खातिर लाइन में नइखे लाग सकत। स्कूल ऑनलाइन चल रहल बा त स्कूल फीस देबहीं के बा। फ्लैट के किराया के अलावा अउरी दोसर देनदारी कपार प चढ़ले बा। मकान के ईएमआई से लेके दवा-दारु तक सब बड़ले बा। एही में रात-बीरात जब कबो अँघी टूटऽता त बुझाता कि मेल प टर्मिनेशन लेटर आइल बा। जे बेरोजगार हो गइल बा, ओकरा नया रोजगार के कवनो संभावना लउकते नइखे। अइसे में आदमी मानसिक, सामाजिक आ आर्थिक अवसाद में घिर रहल बा।

दरअसल दिल आ दिमाग के रास्ता पेट से होके जाला। पेट में आग लागी त ओकर लपट दिल आ दिमाग तक जइबे करी। जब लपट दिल आ दिमाग तक जाई त ओकर असर परिसंचरण तंत्र आ तंत्रिका तंत्र यानी कि दिल के धड़कन आ दिमाग के फड़कन पर पड़बे करी। बीपी बढ़ी आ दिमाग खराब होई। खराब दिमाग से सही निर्णय होला ना। आदमी अंड-बंड करे लागेला। त सउँसे देश में अंड-बंड के स्थिति उपजे के ढेर संभावना बा। ई बहुत बड़ त्रासदी बा जवन कोरोना लेके आइल बा। कोरोना खाली बेमारी ना जिनगी के राहु-काल बा।

कहल जाता कि जइसे दूसरा विश्वयुद्ध के बाद दुनिया के परिदृश्य बदलल रहे ओइसही कोरोना के बाद दुनिया के परिदृश्य बदली। अब ई लउके लागल बा। कुछ सकारात्मक बदलाव लउकता त कुछ नकारात्मको बा। सकारात्मक पहलू ई बा कि कोरोना के डरे हीं सही, लोग अनियमित जीवनशैली से बाहर निकलल बा त नकारात्मक पहलू ई बा कि परिवारिक कलह, सामाजिक निराशा, अपराध में बढ़ोत्तरी जइसन चीज अब ढेर सामने आवता। भलही सरकार के ओर से अस्पतालन में कोरोना के इलाज के कथित तौर प बेहतर सुविधा मुहैया करावल गइल बा बाकिर एह कोरोना से उपजल मानसिक, सामाजिक आ आर्थिक अवसाद में घिरल लोग के काउंसिलिंग खातिर अबहीं ले कवनो व्यवस्था नइखे लउकत। ई हाल खाली अपने देश के ना बलुक दुनिया के विकसित कहाये वाला देशन में भी अबहीं एकर भयावहता के ले के सत्ता प्रतिष्ठान में कवनो गंभीरता नइखे लउकत, जवन एगो बड़ खतरा के सिग्नल दे रहल बा।

आदमी के जिनगी चूल्हा हो गइल बा आ देह लवना। ओही में जरऽता-धनऽकता आदमी। एह लपट से मानवता के बचावे खातिर जल्दिये कुछ उपाय कइल जरुरी बा।

प्रणाम।

मनोज भावुक

सुनीं सभे
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

बेंगलुरु में साजिश के आग

भारत के आईटी राजधानी बेंगलुरु के कुछ इलाकन में एगो छोट बात पर जे तरे से सुनियोजित षड्यंत्र के तहत थाना से लेके विधायक के घर के जरावल गइल, ओकर दोषी बच के ना निकल सके, ई राज्य सरकार के सुनिश्चित करे के होई। ओ लोग पर कठोरतम एक्शन होखे ताकि आगे से अइसन करे के संबंध में केहू सोचियो ना सके।

भारत के आईटी राजधानी बेंगलुरु के कुछ इलाका में एगो छोट बात के लेके जे तरे साम्प्रदायिक हिंसा भड़कावे के साजिश रचल गइल, ओकर दोषी बच के ना निकल सके, ई राज्य सरकार के सख्ती से सुनिश्चित करे के होई। ओ लोग पर कठोर से कठोर एक्शन हो ताकि आगे से अइसन दंगा-फसाद करे के संबंध में केहू सोच भी ना सके। बेंगलुरु के हिंसा में कुछ मासूमन के भी जान गइल, तमाम निर्दोष लोग घायल भइल अउर सरकारी संपत्ति के भारी नुकसान भइल। सबसे अहम बात ई बा कि दुनिया भर में ये हिंसा के गलत संदेश गइल।

बेंगलुरु में लाखों विदेशी पेशेवर लोग रहेला। जरा सोचीं कि उनके आ उनके परिवार के जेहन में के तरे के छवि बनल होई बेंगलुरु आ भारत के ये हिंसा के कारण। बेंगलुरु जइसन आधुनिक महानगर में उपद्रवी लोग जगह-जगह गाड़ी के आग लगावल आ एटीएम तक में तोड़फोड़ कइल। ऊ लोग कांग्रेस के विधायक के घर पर हमला भी कइल। दरअसल बेंगलुरु में कांग्रेस विधायक अखंड श्रीनिवासन मूर्ति के एक कथित रिश्तेदार पैगंबर मुहम्मद के लेके सोशल मीडिया पर कुछ अपमानजनक पोस्ट कइले रहलें, जेकरा प्रतिक्रिया में ही ई सुनियोजित हिंसा भइल। सवाल ई बा कि का अब भारत में कवनो भी मसला पर विरोध जतावे खातिर हिंसा के ही सहारा लेहल जाई? उपर्युक्त पोस्ट के लेके संबंधित व्यक्ति के खिलाफ उचित पुलिस एक्शन हो सकत रहे। केहू के भी कानून अपना हाथ में लेवे के अधिकार हरगिज नइखे।

बेंगलुरु के ताजा घटना से साफ बा कि देश मे धार्मिक कठमुल्लापन बहुत गम्भीर रूप लेले बा। अपना के कट्टर मुसलमान कहे वाला लोग बात-बात पर सड़क पर उतरे लागल बा। ई लोग अपना मजहब के नाम पर कट्टरता फइला रहल बा। एसे जाहिलपन बढ़ते जा रहल बा। इस्लामी कठमुल्लन के आचरण पर सेक्युलरवादियन के रहस्यमय चुप्पी भी डरावना बा। ई लोग अचानक अज्ञातवास में चल गइल बा। का कठमुल्ला लोग जे तरे से हिंसा कइल ओकर ये लोग के भर्त्सना ना करे के चाहत रहे? बेंगलुरु में कठमुल्ला लोग ए निंदा के नाम पर

का कवनो धरम या मजहब एतना कमजोर हो सकऽता जवन सिर्फ आलोचना भर से ही खतरा में आ जाला। दरअसल, मुसलमान के एक वर्ग तालिबानी सोच राखे लागल बा।

गरीब बस्तियन में मुसलमान लोग के उकसावल-भड़कावल। नतीजा ई भइल कि उन्मादी भीड़ जम के तोड़फोड़ कइलस। ई हिंसक उन्माद घण्टों चलल। पुलिस हस्तक्षेप कइलस त ओकरो पर भीड़ हमला बोल देहलस। हिंसक भीड़ के हमला में साठ पुलिस घायल हो गइलन। ई सही में बहुत बड़ा आंकड़ा बा।

जरा खाए-पीए-अघाए लिबरल लोग के जमात अब ई त बताओ कि ऊ लोग चुप्पी काहे साध लेले बा? ये तथाकथित बामपंथिन के चलते ओ समस्त लोग के शर्मिंदा होखे के परेला जे बहुसंख्यक आ अल्पसंख्यक फिरकापरस्तन अउर उनका साम्प्रदायिक सोच से लड़ेला। ई वर्ग ओ करोड़ों अल्पसंख्यक के सामने काँटा बिछावेला जे अपना बीच के उन्मादी आ जाहिल सब से लड़ रहल बा। बेशर्म बा ई लोग। ये लोग के ना शर्म बा, ना हया। याद रखीं तुष्टिकरण के राजनीति जल्द खत्म ना होई काहे कि कुछ स्वार्थी राजनेता लोग के एही में आपन भला नजर आवेला। जब तक कवनो कड़ा कानून ना आई आ तुष्टिकरण के खिलाफ सब विपक्षी पार्टी भी मुँह ना खोली तब तक ये बेंगलुरु जइसन हिंसक वारदात त होते रही।

देश में मुसलमानन के एगो वर्ग भी अब लगभग तालिबानी सोच रखे लागल बा। पिछले दिन राम मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर ई लोग खुल के कहत रहे कि हमनी समय अइला पर उहाँ पर फिर से मस्जिद बना लेम। जरा गौर करीं कि राम मंदिर बनल नइखे आ ओसे पहिले ई लोग मंदिर के तोड़े आ बम से उड़ावे के धमकी देवे लागल। का इहे लोकतंत्र ह? तथाकथित लुटियन गैंग अब काहे नइखे बोलत? अब लेखक वापस काहे नइखन करत आपन पुरस्कार आ कैंडल मार्च काहे नइखन निकालत? ई बेशर्म बुद्धिजीवी देश के सिर्फ अपमानित करे के काम में ही लागल रहेला? जवना थाली में खाईं ओही में छेद करी। आखिर कब तक अइसन होत रही?

ध्यान दीं कि ई लोग दोसरा के आराध्य के अपमान करेला। काहे करे ला? ई उनकर समस्या ह। लेकिन ऊ लोग अपना रसूल के शान में गुस्ताखी ना बर्दाश्त करी। ऊ लोग गुस्ताखे रसूल के एक सजा मुकर्रर कइले बा त ऊ देके रही लोग। ये जद्दोजहद में ऊ लोग आपन जान भी दे दी, जान ले भी ली। सरकार आ कानून उनका खातिर कवनो माने ना राखे। ऊ लोग अपना औलाद से भी ज्यादा अपना रसूल से प्रेम करेला। यदि ऊ केहू के प्रेम करत फूल भी पेश करी त कही कि अल्लाह आ उनके रसूल के बाद हम सबसे ज्यादा मुहब्बत तहरे से करीले। जेकरा ई सब शर्त पर ओ लोग से भाईचारा निभावे के बा निभाओ, नइखे निभावे के त मत निभाओ। उनका मीम भीम के परवाह नइखे। उनकर ईमान ह कि इज्जत देवे वाला रब्बुल इज्जत ह ना कि बुतपरस्त कुफ्फार। ई लोग स्वस्थ आलोचना तक बर्दाश्त नइखे कर सकत। ई लोग कभी शिक्षा, रोजगार, मांगे त सड़क पर ना उतरी पर धर्म के नाम पर तुरंत आग लगा दी। का कवनो धर्म या मजहब एतना कमजोर हो सकऽता, जवन सिर्फ आलोचना भर से ही खतरा में आ जाला।

खैर, जे केहू भी बेंगलुरु में हिंसा भड़कावल या ओमे भाग लेहल, ओ लोग के कवनो भी हालत में छोड़े के ना चाहीं। ओ लोग के सही पहचान कर के कठोर दण्ड मिलहीं के चाहीं। हिंसा के कारण देश के साफ छवि पर अकारण दाग लगा देहल गइल बा। ठोस सबूत मिल रहल बा कि बेंगलुरु में भड़कल हिंसा सुनियोजित साजिश के नतीजा

रहे। वर्ना एतना बड़ पैमाना पर अचानक हिंसा भड़क ही ना सकत रहे। बेंगलुरु के जवना-जवना भाग में हिंसा भड़कल उहाँ सब धर्म के लोग मिल-जुल के लम्बा समय से रहत चल आवत रहे। ये लोग में कवनो आपसी वैमनस्य दूर-दूर तक के ना रहे। पर अचानक से ये सौहार्द के वातावरण के केहू के नजर लाग गइल। बेशक ये हिंसा से एक बार त दहल ही गइल भारत के आईटी राजधानी। बेंगलुरु पुलिस के तारीफ करे के होई कि ऊ हिंसा के महानगर के बाकी भाग में फइले ना देहलस। ई पुलिस के भारी सफलता ही मानल जाई। अब दंगाई सबके तेजी से पहिचान करे के चाहीं ताकि ओ सबके सबक सिखावल जा सके।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।)

राम विशेष

बद्रीनाथ वर्मा

अभिनंदन हे रघुनंदन

तकरीबन 500 साल के संघर्ष, तप, त्याग, बलिदान अउर अटल आस्था के प्रतिफल के रूप में 5 अगस्त के राम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण क श्रीगणेश क रूप में भूमि पूजन करोड़ें हिंदू जनमानस के प्रसन्नता क पराकाष्ठा प्रदान करे वाला अनुभूति बा। राम मंदिर क नींव रखइला क खुशी आ जोश सिर्फ भारते में ना बल्कि दुनिया के कई हिस्सन में देखल गइल। हर तरफ बस श्री राम जय राम जय जय राम क धुन सुनाई दिहलस। घर के मुंडेर, छत आ बालकनियन पर जल रहल देदीप्यमान दीप आ भजन कीर्तन क मधुर स्वर लहरी मानी इ कहत रह स कि अभिनंदन हे रघुनंदन। भगवान श्रीराम क जन्मभूमि पर भव्य आ दिव्य मंदिर के भूमि पूजन अउर ओकरा से निकलल संदेश के रेखांकित करत बा ई राम कथा।

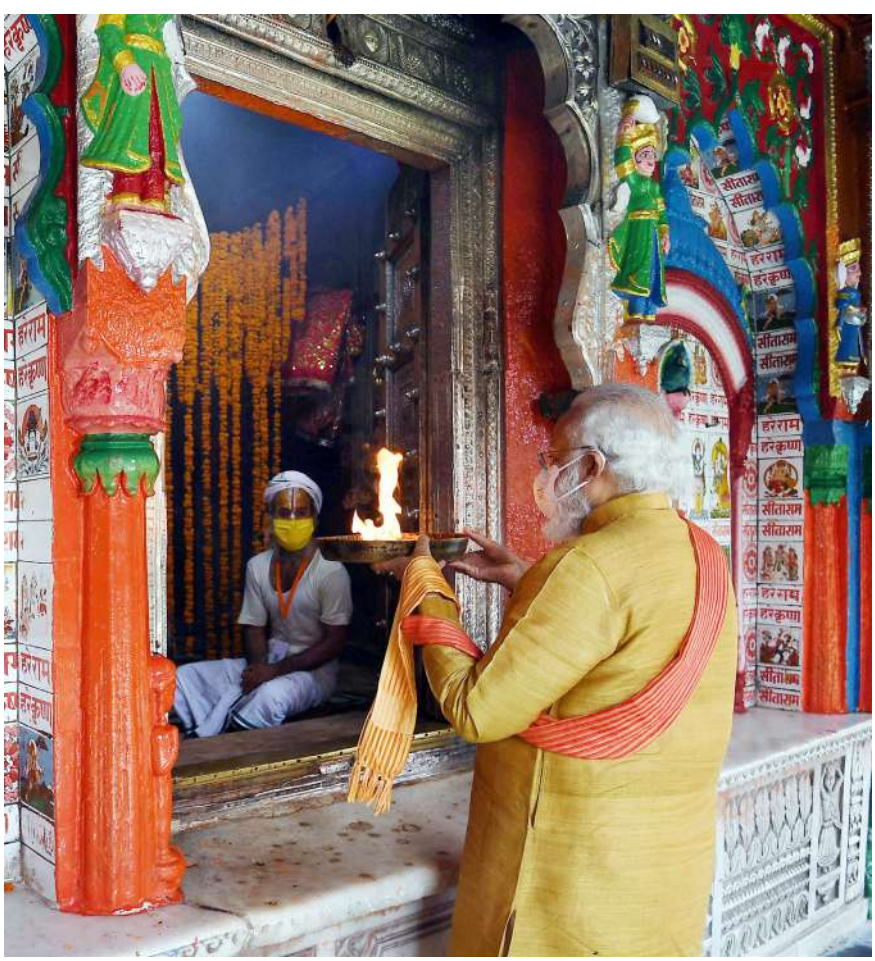

श्रीराम भारत क मयार्दा हईं, श्रीराम मयार्दा पुरुषोत्तम हईं। राम मंदिर खातिर चलल आंदोलन में अर्पण भी रहे, समर्पण भी रहे, तर्पण भी रहे, संघर्ष भी रहे आ संकल्प भी रहे। करीब 500 साल तक चलल विवाद आ हिंदुस्तान के इतिहास क सबसे लंबी कानूनी लड़ाई के बाद 5 अगस्त के अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि परिसर में भव्य मंदिर खातिर भूमिपूजन संपन्न भइल। श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य आ दिव्य मंदिर निर्माण खातिर संपन्न भूमि पूजन के साथहीं पांच अगस्त क दिन एक बार फिर इतिहास के पन्ना में स्वर्णाक्षर में दर्ज हो गइल। ई दिन विश्व भर के हिंदुअन के सांस्कृतिक आजादी के दिन बन गइल। पिछला साल एही पांच अगस्त के जम्मू-कश्मीर के अनुच्छेद 370 से आजादी मिलल रहे। अब राम मंदिर क भूमि पूजन करोड़ो हिंदू जनमानस के प्रसन्नता के पराकाष्ठा प्रदान करे वाला अनुभूति बा। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद बधाई देके कहलन कि भगवान राम के मंदिर क निर्माण न्याय प्रक्रिया के अनुरूप आ जनसाधारण के उत्साह आ सामाजिक सौहार्द के संबल से हो रहल बा आ ई आधुनिक भारत क प्रतीक बनी।

गौरतलब बा कि जवना जगह रामलला अस्थायी मंदिर में विराजमान बानीं ऊ 2.77 एकड़ भूमि के भगवान राम क जन्मभूमि स्वीकार करके सुप्रीम कोर्ट के पांच जज के संविधान पीठ सर्वसम्मति से पिछला साल 9 नवंबर के ऐतिहासिक निर्णय दिहले रहे। अयोध्या में राम क जन्मस्थान बा। एह तथ्य के कोर्ट निर्विवाद मनलस। रामलला के पक्ष में फैसला सुनावे क आधार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण क खुदाई से निकलल सबूत बनल। कोर्ट मनलस कि बाबरी मस्जिद खाली जमीन पर ना बनल रहे। मस्जिद के नीचे विशाल रचना रहे। एएसआई 12वीं सदी क मंदिर बतवले रहे। कोर्ट आपन निर्णय में कहलस कि ओजहां से जवन कलाकृति मिलल रहे, ऊ इस्लामिक ना ह। विवादित ढांचा में पुरान संरचना क चीज इस्तेमाल कइल गइल रहे। सुप्रीम कोर्ट के ई फैसला करोड़न हिंदू जनमानस के सैकड़ो साल के संघर्ष आ बलिदान के मान्यता प्रदान करने वाला रहे। यानी रामजन्मभूमि रहे, रामजन्मभूमि बा आ रामजन्मभूमि ही रही। उल्लेखनीय बा कि 1528 में ताकत के बल पर बहुसंख्यक समुदाय के धार्मिक भावना के आहत करे के उद्देश्य से मुगल आक्रांता बाबर क आदेश पर रामजन्मभूमि के ढहाके ओजहां मस्जिद तामीर कर दिहल गइल रहे। ओह समय भी मंदिर क रक्षा खातिर अनगिनत लोग आपन प्राण क बलिदान क दिहले रहे आ ओकरा बादो लगातार रामजन्मभूमि खातिर खूनी संघर्ष चलत रहल, जेमें साधु-संन्यासिन से लेके आम गृहस्थ तक आपन जीवन क आहुती देत रहले। आस्था आ जिद क ई टकराहट लगातार चलत रहल। आखिरकार तमाम झंझावात के पार करके मंदिर निर्माण के प्रक्रिया शुरू हो चुकल बा।

बहरहाल, राम मंदिर क नींव रखइला क जोश सिर्फ भारते में ना बल्कि दुनिया के कई हिस्सन में देखल गइल। हर तरफ बस जय श्री राम जय जय श्री राम क गूंज सुनाई देत रहल। घर के मुंडेर, छत आ बालकनियन पर जलत देदीप्यमान दीप मानो कहत होखे अभिनंदन हे रघुनंदन। दीवाली से पहिलही मनल ई दीवाली ओही तरह के रहे जइसे वनवास खत्म करके अयोध्या लौटला पर भगवान राम क स्वागत दीप जलाके कइल गइल रहे। अमेरिका में रहे वाला भारतीय समुदाय भी एह मौका पर खुलके खुशी क इजहार कइल। एहर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22.6 किलोग्राम वजनी चांदी के ईंट समेत कुल 9 चांदी के ईंट के साथ अयोध्या में श्रीराम मंदिर के शिलान्यास कइलन। ओहर न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वेयर पर बिलबोर्ड पर भगवान राम के साथ राम मंदिर देखावल गइल। एकरा से पहिले वॉशिंगटन डीसी में भारतीय समुदाय के लोग पारंपरिक कपड़ा पहिन के जश्न मनावत देखल गइले।

रामलला के साष्टांग प्रणाम

भारतीय पारंपरिक परिधान धोती कुर्ता में पीएम नरेंद्र मोदी जइसहीं रामलला विराजमान के पास पहुंचले जमीन पर लेटके साष्टांग दंडवत कइले। पीएम 29 साल पहिले कहले रहले कि जब राम मंदिर बनी तबे ऊ अयोध्या अइहन आ उहे भइल। सुप्रीम कोर्ट क फैसला रामलला के पक्ष में अइला के बाद राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण खातिर पहिला ईंट उहे रखले। रामलला क दर्शन कइला से पहिले हनुमान गढ़ी में पीएम हनुमान जी के सामने झुकके प्रणाम कइलें। ए दौरान ऊ हनुमान जी क आरती भी कइले आ प्रदक्षिणा भी कइले। भूमि पूजन के पहिले पीएम मोदी राम मंदिर परिसर में पारिजात क पौधा भी लगवले। शुभ घड़ी में राम मंदिर के नींव क ईंट रखला के बाद प्रधानमंत्री पूरा श्रद्धा के साथ नींव के प्रणाम कइलन आ नींव क मिट्टी लेके अपना माथा पर टीका लगवलन।

पूरा देश रोमांचित बा, हर मन दीपमय बा
(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उद्बोधन क संपादित अंश)

जय सियाराम के साथ आपन संबोधन के प्रारंभ करत प्रधानमंत्री कहलन कि पूरा देश रोमांचित बा, हर मन दीपमय बा। सदियन क इंतजार आज समाप्त हो रहल बा। श्री रामचंद्र के तेज में सूर्य के समान, क्षमा में पृथ्वी के तुल्य, बुद्धि में बृहस्पति के सदृश्य आ यश में इंद्र के समान मानल गइल बा। श्रीराम क चरित्र सबसे अधिक जवना केंद्र बिंदु पर घूमत बा, ऊ बा सत्य पर अडिग रहना। एही कारण से श्रीराम संपूर्ण हउवन। श्रीराम सामाजिक समरसता के आपन शासन के आधारशिला बनवले रहलन। भगवान राम गुरु वशिष्ठ से ज्ञान, केवट से प्रेम, शबरी से मातृत्व, हनुमानजी आ वनवासी बंधुअन से सहयोग आ प्रजा से विश्वास प्राप्त कइलन। इहां तक कि एक गिलहरी क महत्ता के भी ऊ सहर्ष स्वीकार कइलन। उनकर अद्भुत व्यक्तित्व, उनकर वीरता, उनकर उदारता, उनकर सत्यनिष्ठा, उनकर निर्भीकता, उनकर धैर्य, उनकर दृढ़ता, उनकर दार्शनिक दृष्टि युगो-युगो तक प्रेरित करत रही।

प्रधानमंत्री कहलन कि राम प्रजा से एक समान प्रेम करे वाला रहलन। लेकिन, गरीब आ दीन-दुखियन पर उनकर विशेष कृपा रहत रहे। जीवन क अइसन कवनो पहलू नइखे, जहां हमार राम प्रेरणा ना देत होखस। भारत क अइसन एकहू भावना नइखे जेमें प्रभु राम झलकत ना होखस। भारत के आस्था में राम बाड़न, भारत के आदर्शों में राम बाड़न। भारत के दिव्यता में राम बाड़न, भारत के दर्शन में राम बाड़न। हजारो साल पहिले वाल्मीकि के रामायण में जवन राम प्राचीन भारत क पथप्रदर्शन करत रहलन, जवन राम मध्ययुग में तुलसी, कबीर आ नानक के जरिए भारत के बल देत रहलन, उहे राम आजादी के लड़ाई के समय बापू के भजन में अहिंसा आ सत्याग्रह के शक्ति बनके मौजूद रहलन।

एह मंदिर के साथ सिर्फ नया इतिहास ही नइखे रचात, बल्कि इतिहास खुद के दोहरा भी रहल बा। जइसे गिलहरी से लेके वानर आ केवट से लेके वनवासी बंधुन के भगवान राम के विजय क माध्यम बने क सौभाग्य मिलल। जइसे दलित-पिछड़ा-आदिवासी, समाज क हर वर्ग आजादी के लड़ाई में गांधी जी के सहयोग दिहल। ओही तरह आज देशभर के लोग के सहयोग से राम मंदिर निर्माण क ए पुण्य-कार्य प्रारम्भ भइल बा। जइसे पत्थरन पर श्रीराम लिखके रामसेतु बनावल गइल, ओइसहीं घर-गांव से श्रद्धापूर्वक पूजित शिला, एजहां ऊर्जा के स्रोत बन गइल बा। देश भर के धाम से, घर से, गांव आ मंदिरन से लिआइल गइल माटी आ नदियन क जल, उहां के लोग, उहां के संस्कृति आ उहां क भावना, आज उहां क शक्ति बन गइल बा।

प्रधानमंत्री कहलन कि आज भी भारत के बाहर कई गो अइसन देश बा जहां, ओजहां के भाषा में रामकथा, आज भी प्रचलित बा। हमके विश्वास बा कि आज ऊ सब देश में भी करोड़ो लोगन के राम मंदिर के निर्माण क काम शुरू होखला से बहुत सुखद अनुभूति हो रहल होई। श्रीराम क नाम के तरह ही अयोध्या में बने वाला ई भव्य राममंदिर भारतीय संस्कृति के समृद्ध विरासत के द्योतक होई। ई राममंदिर अनंतकाल तक पूरी मानवता के प्रेरणा देई। हमनी के ई भी सुनिश्चित करेके बा कि भगवान श्रीराम क संदेश, राममंदिर क संदेश, हमनी के हजारों साल के परंपरा क संदेश, कइसे पूरा विश्व तक निरंतर पहुंचे। कइसे हमनी क ज्ञान, हमनी क जीवन-दृष्टि से विश्व परिचित होखे ई हमनी क वर्तमान आ भावी पीढ़ियन क जिम्मेदारी बा। राम परिवर्तन के पक्षधर हउवन, राम आधुनिकता के पक्षधर हउवन। उनकर एही प्रेरणा के साथ, श्रीराम के आदर्श के साथ भारत आज आगे बढ़ रहल बा।

प्रधानमंत्री आगे कहलन कि कि प्रभु श्रीराम हमनी के कर्तव्यपालन के सीख दिहले बाड़न, आपन कर्तव्य कइसे निभावल जाला एकर सीख देले बाड़न। उ हमनी के विरोध से निकलके, बोध आ शोध क मार्ग देखवले बाड़न। हमनी क आपसी प्रेम आ भाईचारे क जोड़ से राममंदिर क एह पत्थरन के जोड़े के बा। हमके विश्वास बा, हमनी सब केहू आगे बढ़ल जाई, देश आगे बढ़ी। जब-जब मानवता राम के मनले बा, तब-तब विकास भइल बा आ जब-जब इ भटकल बा, विनाश क रास्ता खुलल बा। पीएम कहलन कि हमनी के सबकर भावना क ध्यान रखे के बा। विश्व के सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या वाला इंडोनेशिया सहित दुनिया में कई गो अइसन देश बा जे भगवान राम के नाम क वंदन करेला। उ कहलन कि रामायण इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस, मलेशिया, थाईलैंड, श्रीलंका आ नेपाल में प्रसिद्ध आ पूजनीय बा। भगवान राम क जिक्र ईरान आ चीन तक में पावल गइल बा आ 'राम कथा' कई देशन में प्रचलित बा।

इहां तक कि यूएस कैपिटोल हिल से वाइट हाउस तक रथयात्रा भी निकालल गइल। कैलिफोर्निया, वॉशिंगटन, टेक्सस आ फ्लोरिडा के मंदिरन में भी विशेष आयोजन कइल गइल। ब्रिटेन में भी इहे नजारा लउकल। देश होखे या विदेश, शहर होखे या गांव चारो तरफ बस उल्लास व भक्ति क वातावरण लउकल।

वस्तुतः अयोध्या में भव्य राममंदिर क भूमि पूजन भारत के ओह नया आ मौलिक स्वरूप के उद्भव भी बा जे पूरी दुनिया में आपन मजबूत पहचान स्थापित कर रहल बा। ई नया भारत अब पाकिस्तान के घर में घुसके ठीक करत बा त चीन के भी सरहद पर ओकर औकात देखावे में सोच विचार नइखे करत। नया भारत में अब लोग आपन संस्कृति पर हीनता ना बल्कि गर्व महसूस करत बा। भारत क विचार मानव सभ्यता के वसुधैव कुटम्बकम के सीख देला। ऊ अहिंसा आ सहअस्तित्व के हामी ह लेकिन ऊ निर्भीकता आ आत्मगौरव के भी धारण करेला। आज के भारत में उ वर्ग अलग-थलग पड़ गइल बा जे प्राचीन भारत के आजादी के बाद लोकमानस से विलोपित कर केवल मध्यकालीन मुगलिया इतिहास के प्रतिष्ठित कइलस। अयोध्या आ राम के सवाल ये ब्रिगेड खातिर शूल क तरह चुभत रहल ह। इहे कारण बा कि यूपीए सरकार आपन अधिकृत हलफनामा में राम के काल्पनिक चरित्र करार देत रामसेतु के अस्तित्व के नकार देबे क दुस्साहस कइले रहे।

एकरा विपरीत राम मानवता क सबसे सुंदर सपना क साकार रूप हईं। राम भारत क पहचान हईं आ ये पहचान के पुष्ट करे वाला हर कार्य स्तुत्य बाटे। कई सदियन क बाद एगो अइसन सपना साकार भइल जेकरा खातिर लाखो लोग आपन जिंदगी खपा दिहले आ लाखो लोग आपन प्राण न्योछावर कर दिहले, सिर्फ ई दिन देखे खातिर कि अयोध्या में एक न एक दिन भव्य राम मंदिर क निर्माण होई। आज क पीढ़ी सचमुच ही बहुत सौभाग्यशाली बा जेके श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण देखे क सौभाग्य प्राप्त हो रहल बा। आज क पीढ़ी गर्व से कह सकेले कि हमनी क भव्य राम मंदिर के एक-एक ईंट के लागत देखले बानी जा। सबसे ज्यादा सौभाग्य क बात ह कि हमनी क अपना आराध्य राम के टेंट के मंदिर से भव्य राम मंदिर में विराजमान होत देखत बानी जा। ई दिन देखे खातिर ना जाने केतना पीढ़ी संघर्ष कइल आ न जाने केतना रामभक्त आपन लहू बहवले बाड़न। जिनका त्याग, बलिदान आ संघर्ष से ई स्वप्न साकार भइल बा, जिनकर तपस्या राम मंदिर में नींव के तरह जुड़ल, ओह सबका प्रति सब सनातनधर्मी श्रद्धावनत बा। केरोना महामारी के चलते बेशक लोग श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण भूमि पूजन के गर्व भरल पल के सशरीर साक्षी न बन पावल

नींव में कुंभ कलश आ सोना के सिक्का

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी श्री राम मंदिर के भूमि पूजन के वक्त चांदी के कुंभ कलश जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, सरसंघचालक मोहन भागवत आ राज्यपाल आनंदी बेन पटेल एक-एक स्वर्ण सिक्का नींव में डललन जा। पीएम मोदी रामलला के भेंट करे खातिर चांदी के कुंभ कलश दिल्ली से ही अपना साथ लेके गइल रहलन। हालांकि, जब ऊ भूमिपूजन स्थल क तरफ बढ़े लगलन त कुंभ कलश कार में ही भूल गइल रहलन। जब उनके याद आइल त ऊ वापस जाके कुंभ कलश लिहलन आ भूमि पूजन करे गइलन। अयोध्या पहुंचके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक साथ तीन गो रेकॉर्ड बना दिहलन। श्रीराम जन्मभूमि जाये वाला प्रथम प्रधानमंत्री बने क गौरव पीएम मोदी त हासिल कइबे कइलन ई भी देश में पहिला मौका बा जब कवनो प्रधानमंत्री अयोध्या के हनुमानगढ़ी के दर्शन कइल। एही के साथ देश के सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के प्रतीक कवनो मंदिर के शुभारंभ कार्यक्रम में हिस्सा लेबे वाला मोदी पहिला प्रधानमंत्री बन गइल बाड़न।

लेकिन राम अनादि से अनन्त तक बाड़न आ समस्त विश्व के राम भक्त राम में ही समाइल बाड़न एहसे उ जहां भी रहले ई कार्यक्रम के भागीदार बनले। भव्य राम मंदिर क निर्माण हमनी के सैकड़ों वर्षन क दासता के दंश से मुक्त करे वाला अइसन सुअवसर बा जेके बस महसूस कइल जा सकल जात बा।

राम मंदिर क आधारशिला रखला के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहले कि राम सबकर हउवन आ सबका में बाड़न। मंदिर के भूमिपूजन के साथही भारत के सबसे चर्चित लंबा वक्त तक चले वाला विवाद के एक तरह से पटाक्षेप होखे के ऐलान करत भाईचारा क संदेश दिहले। प्रधानमंत्री कहलन कि राम क सब जगह होखल भारत के विविधता में एकता क जीवन चरित्र ह। हालांकि, असदुद्दीन ओवैसी आ मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के तरफ से नया विवाद पैदा करे के कोशिश जरूर कइल गइल। दरअसल, भूमिपूजन के लेके जारी ये सियासी रुदाली रुदन के बहुत ही गहरा निहितार्थ बा। भूमिपूजन भारत खातिर केवल एगो मंदिर भर के महत्व नइखे रखत बल्कि आत्मगौरव से अलगाव आ विषैल वाम आवरण से मुक्ति के महापर्व भी ह। अयोध्या में भव्य राममंदिर क भमिपूजन लगभग 500 साल तक चलल एक अनथक संघर्ष क लोकतांत्रिक विजय क स्वर्णिम पर्व भी बा। एही के साथ सियासी रुदालियन खातिर वैचारिक रूप से सुपुर्दे खाक होखे जइसन पड़ाव बा। स्वाभाविक बा कि 5 अगस्त 2019 के 370 के समाप्ति आ अब 2020 में 5 अगस्त के ही भव्य राममन्दिर भूमि पूजन क पीड़ा असहनीय ही होई।

तीन मंजिल, तीन साल आ सौ करोड़ क लागत

आर्किटेक्ट प्रॉजेक्ट क अनुसार मंदिर के बनके तैयार होखला में तीन से साढ़े तीन साल क समय लागी। मंदिर तीन मंजिला होई आ ई वास्तुशास्त्र के हिसाब से बनावल जाई। मंदिर के शिल्पकार चंद्रकांत सोमपुरा के अनुसार मंदिर बनावे में कम से कम 100 करोड़ रुपये क लागत आई। हालांकि निर्माण के अवधि क सीमा तय कइला पर ज्यादा संसाधन क जरूरत पड़ी। एसे मंदिर निर्माण क लागत बढ़ भी सकेला।

यजमान मोदी से पंडितजी मंगले खास दक्षिणा

भव्य राम मंदिर के नींव पूजन कार्यक्रम के विधिवत संपन्न करावे वाला आचार्य पंडित गंगाधर पाठक यजमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से एगो खास दक्षिणा मंगले। पाठक जी के मुताबिक पूजन के दौरान राम मंदिर ट्रस्ट के लोग उनका के प्रधानमंत्री मोदी से दक्षिणा मांगे से रोक दिहलन जा। एही से माहौल के देखत पूजन के दौरान ऊ इशारा से मोदी से दक्षिणा मंगलन। लेकिन अब ऊ मीडिया के माध्यम से दक्षिणा के रूप में आपन तीन बात स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री तक पहुंचावल चाहत बाड़न। पंडित जी के अनुसार पूजन के बाद यजमान से दक्षिणा मांगल कवनो अपराध ना होला। ऊ पीएम मोदी से दक्षिणा में तीन चीज चाहत बाड़न। पहिला, भारत के गोहत्या के कलंक से मुक्त करावल जाव। साथ ही काशी विश्वनाथ आ मथुरा क कृष्ण जन्मभूमि जवन अभी भी संक्रमित बनल बा ओकर भी समाधान हो जाव। पाठक जी इहे बात पीएम मोदी से भूमिपूजन के दौरान भी इशारा में कहले रहलन लेकिन अब ऊ मीडिया के माध्यम से साफतौर पर आपन बात उनकरा तक पहुंचावल चाहत बाड़न। आचार्य गंगाधर अपना आपके सौभाग्यशाली मानत बाड़न कि उनका के राम मंदिर क भूमि पूजन करावे क अवसर मिलल।

बहरहाल, अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण खातिर आचार्य गंगाधर पाठक के पौरोहित्य में पूरा वैदिक रीति से भूमि पूजन कइला के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जय सिया राम के साथ आपन सम्बोधन के शुरूआत कइलन आ कहलन कि आज ई जय घोष के गूंज पूरा विश्व में बा। बरसों से टाट आ टेंट के नीचे रहे वाला हमनी के रामलला खातिर अब एक भव्य मंदिर क निर्माण होखे जा रहल बा। टूटल आ फिर उठ खड़ा होखल, सदियन से चल रहल ये व्यतिक्रम से रामजन्मभूमि आज मुक्त हो गइल। पीएम कहले कि राम मंदिर खातिर चलल आन्दोलन में अर्पण भी रहे, तर्पण भी रहे, संघर्ष भी रहे, संकल्प भी रहे। राम हमनी के मन में गढ़ल बाड़न आ हमनी के भीतर बसल बाड़न। आप लोग भगवान राम क अद्भुत शक्ति देखीं जा। मंदिर नष्ट कर दिहल गइल, अस्तित्व मेटावे क प्रयास भी बहुत भइल। लेकिन, राम आज भी हमनी के मन में बसल बाड़न। राम हमनी के संस्कृति क आधार हउवन। श्रीराम जन्मभूमि पर बने वाला इ मंदिर हमनी के संस्कृति के आधुनिक प्रतीक बनी। हमनी क शाश्वत आस्था क प्रतीक बनी। हमनी के राष्ट्रीय भावना क प्रतीक बनी आ ई मंदिर करोड़ो करोड़ लोगन के सामूहिक संकल्प शक्ति क भी प्रतीक बनी। राममंदिर के निर्माण क ई प्रक्रिया, राष्ट्र के जोड़े क उपक्रम बा। ई महोत्सव बा विश्वास के विद्यमान से जोड़े क, नर के नारायण से जोड़े क, लोक के आस्था से जोड़े क, वर्तमान के अतीत से जोड़े क आ स्वयं के संस्कार से जोड़े क।

एसे हटके राम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण खातिर भूमि पूजन के साथ ही 5 अगस्त क ई तारीख एक भारत श्रेष्ठ भारत, सशक्त भारत आ संप्रभु नया भारत के अभ्युदय के गौरवशाली तिथि के रूप में हमेशा याद रखल जाई। उल्लेखनीय बा कि भारतवर्ष के स्वाभिमान पर अपमान के रूप में चस्पा कर दिहल गइल अनुच्छेद-370 के समाप्ति के भी तिथि 5 अगस्त ही बा। अनुच्छेद 370 के समाप्ति खातिर देश के सात दशक तक लंबा इंतजार करे के पड़ल। एह अनुच्छेद के वोटबैंक क गंदी सियासत के वजह से सालो साल पालल-पोसल गइल। पंडित जवाहर लाल नेहरू कहले रहले कि ई घिसते घिसते एक दिन पूरा घिस जाई लेकिन अइसन हो ना सकल या जान बूझके होखे ना दिहल गइल। नेहरू के ए घोषणा के विपरीत उनहीं के अनुयायियन के ओर से अनुच्छेद-370 के ये बदनुमा दाग के देश के दामन पर स्थाई रूप से टांक देबे खातिर कुल्ही हद लांघ दीहल गइल। एकरा के अइसन पेंचीदा बनाके देश क जनता के सामने पेश कइल जात रहे जेसे लागे लागल रहे कि शायद ही देश क माथा पर लागल ई कलंक कबो धोआ पाई। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आ गृहमंत्री अमित शाह के मजबूत इच्छा शक्ति एकरा के बालू क भीत के तरह ढहा दिहलस। राज्यसभा में अमित शाह क ओर से जइसही अनुच्छेद 370 के खात्मा क घोषणा भइल पूरा देश झूम उठल रहे।

(लेखक बद्रीनाथ वर्मा युगवार्ता के सहायक संपादक हईं। समसामायिक विषय पर देश के सैंकड़न पत्र -पत्रिकन में नियमित तौर पर लेखन करत रहीले।)

भोजपुरी साहित्य के गौरव
डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

दिवंगत भोजपुरी सेवी: परिचय
भाग-4

''भोजपुरी साहित्य के गौरव'' स्तम्भ में दिवंगत साहित्य सेवियन के संक्षिप्त परिचय के सिलसिला पिछला कई अंकन से जारी बा। अब तक निम्नलिखित तैंतीस गो दिवंगत साहित्यकार के संक्षिप्त परिचय रउरा पढ़ चुकल बानी।

अंक 11 में

1. महापंडित राहुल सांकृत्यायन
2. दूधनाथ उपाध्याय
3. महिन्दर मिसिर
4. रघुवीर नारायण
5. भिखारी ठाकुर
6. मनोरंजन प्रसाद सिंह
7. महेन्द्र शास्त्री
8. दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'
9. राम विचार पांडेय
10. डॉ. उदय नारायण तिवारी
11. धरीक्षण मिश्र

अंक 12 में

12. प्रसिद्ध नारायण सिंह
13. रघुवंश नारायण सिंह
14. राम बचन द्विवेदी 'अरविंद'
15. डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'
16. शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी
17. हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'
18. डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय
19. विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा'
20. पांडेय नर्मदेश्वर सहाय
21. कुलदीप नारायण राय 'झड़प'
22. पंडित गणेश चौबे

अंक 13 में

23. डॉ.स्वामी नाथ सिंह
24. राघव शरण मिश्र 'मुँहदूबर'
25. जगदीश ओझा 'सुन्दर'
26. रामनाथ पाठक 'प्रणयी'
27. मोती बी ए
28. महेश्वराचार्य
29. ईश्वर चंद्र सिन्हा
30. रामनाथ पांडेय
31. राधा मोहन राधेश
32. हरेन्द्रदेव नारायण
33. मास्टर अजीज

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

महिन्दर मिसिर

रघुवीर नारायण

भिखारी ठाकुर

मनोरंजन प्रसाद सिन्हा

दूधनाथ सिंह

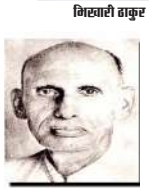
महेन्द्र शास्त्री

दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

रामविचार पांडेय

डॉ. उदय नारायण तिवारी

धरीक्षण मिश्र

प्रसिद्ध नारायण सिंह

रघुवंश नारायण सिंह

राम बचन द्विवेदी 'अरविंद'

डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'

शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय'

डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय

विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा'

पांडेय नर्मदेश्वर सहाय

कुलदीप नारायण राय 'झड़प'

पं. गणेश चौबे

डॉ. स्वामी नाथ सिंह

राघव शरण मिश्र 'मुँहदुब्बर'

जगदीश ओझा 'सुन्दर'

रामनाथ पाठक ' प्रणयी '

मोती बी. ए.

महेश्वराचार्य

अब आगे पढ़ीं - संपादक

ईश्वर चंद्र सिन्हा

रामनाथ पांडेय

राधा मोहन राधेश

हरेन्द्रदेव नारायण

मास्टर अजीज

पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

अपना उपन्यास आ कहानी संग्रह से भोजपुरी कथा साहित्य के पोढ़ बनावे वाला पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के जनम सारन जिला के मांझी थाना का शीतलपुर बरेजा गाँव में सन1905 ई. में एगो जमींदार परिवार में भइल रहे। अपने के निधन 09 फरवरी 1988 ई. के पटना में हो गइल। अपने के विरासत में जोत जमींदारी के सङे-सङे शिक्षा आ साहित्य के माहौल मिलल रहे। अपने के पिता दामोदर सहाय 'कविकिंकर' द्विवेदी युग के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार रहीं। पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के शिक्षा-दीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से भइल। अपने आपन पैतृक जमीनदारी के देखरेख के सङे-सङे साहित्य सेवा में संलग्न रहनी। गाँव में अपना पुस्तकालय के संचालन, साहित्यिक आयोजन आ लेखन के काम अनवरत चलत रहल। अपने के हिन्दी के पुस्तकन के नाम बा- 'घरौंदा' (कहानी संग्रह), 'बाल बिनय (संपादन), 'भारत गीत' (संपादन), हिंदी मासिक 'ग्रामीण जीवन' के तीन बरिस तक संपादन। लगभग एक सै हिन्दी कहानी पत्र पत्रिकन में छपल छितराइल बा। पचासहन निबंधो पत्र पत्रिकन में छपल बा। भोजपुरी में फुटकर रूप से निबंध आ कहानी छपत रहल बा। **पुस्तक रूप में भोजपुरी के उपन्यास-'घर टोला गाँव', जवना के पहिला आँचलिक उपन्यास होखे के गौरव मिलल,1979 ई. में छपल।** इहाँ के लिखल पाँच कहानियन के संग्रह 'खरोंच' 1984 ई. में छपल। एह में के एक कहानी 'गुरु दक्षिणा' के हिंदी नाट्य रूपांतर दूरदर्शन केंद्र से बहुत पहिले प्रसारित भइल रहे। अपने सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तेरहवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष रहीं। बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन अपना रजत जयंती के अवसर पर अपने के सारस्वत्य सम्मान कइलस। अपने के सुदीर्घ साहित्य सेवा के देखत बिहार सरकार के राजभाषा विभाग पुरस्कृत कइलस। अपने के पूरा परिवार साहित्य के ओर प्रवृत्त रहल बा। भोजपुरी आंदोलन के अगुआ पांडेय कपिल जी, पांडेय सुरेन्द्र जी आ पी. चन्द्रबिनोद जी जइसन साहित्यकार लोग अपनहीं के पुत्र हवन।

बिसराम

बिरहिया बिसराम से प्रसिद्ध बिसराम के जनम उ. प्र. के आजमगढ़ जिला के सियाराम पुर गाँव में सन1907 ई. में भइल रहे, जबकि निधन 1950 ई. में। ई गाँव टोन्स नदी, जवना के तमसा नदी से जानल जाला, के किनारे बा। इनकर बाप मतारी इनका के पढ़ावे के ढेर कोशिश कइलें, बाकिर इनकर मन इसकूल में आ पढ़े में ना लागल। ई प्रकृति में रमस। बाग-बगइचा, खेत-खरिहान, नदी-पोखरा में समय बीते लागल। अठारह बरिस के उमिर में इनकर बिआह भइल। मेहरी बड़ा सुघर आ सुन्नर अइली। उनकरे में एह प्रकृति के पाठशाला के मनई भोराइल रहे लगलन। बाकिर, ई दाम्पत्य सुख उनका ढेर दिन ले ना मिलल। उनकर पत्नी रानी 1930 ई. के आस-पास निमोनिया से सिधार गइली। उनकर नदी किनारे दाह संस्कार होत रहे। चिता के लहोक जसहीं उठल, विरह व्यथित बिसराम के मुँह से अचानक काव्यधारा फूटल, भोजपुरी के एगो बाल्मीकि भेंटा गइलन। ऊ चूकि पढ़े-लिखे के ना जानत रहन, लिपिबद्ध ना करत रहन। गाँवे के मुखराम सिंह के लागल कि विरह सिंगार के काव्य के नायाब नमूना छिन्न भिन्न हो जाई। एह से ऊ ओकरा के लिपि बद्ध कइल शुरू कइलन। विरहा छंद के एह अनुपम कवितन में काव्य कुशलता, प्रकृति निरीक्षण आ भाव चित्रण के एक से एक उदाहरण भरल बा। सन् 1948 ई. में बिसराम के बिरहन के रसिक समाज का सोझा परमेश्वरी दयालु गुप्त ले अइलें, जब उनकर एगो लेख 'समाज' नाम के पत्रिका में 03 जून के छपल रहे। आगे चल के 1956 ई. में 'बिसराम के बिरहे' नाम से बीस गो बिरहन के संग्रह भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी से छपल। एह पुस्तक पर संग्रहकर्ता रूप में मुखराम सिंह के नाम आ संपादक रूप में ईश्वर चंद्र सिन्हा के नाम बा। संपादन हिंदी माध्यम से भइल बा। एकर भूमिका डॉ. बलदेव उपाध्याय जइसन विद्वान लिखले बानी।

भुवनेश्वर प्र. श्रीवास्तव ' भानु '

भानु जी के जनम बिहार के शाहाबाद (अब भोजपुर) जिला के चंदा अखौरी, गजराज गंज गाँव में संवत 1967 के बैशाख महिना के अँजोरिया पख में चतुरदसी तिथि के भइल रहे। एह हिसाब से उहाँ के अंग्रेजी कलेन्डर में 1910 ई. के अप्रील चाहे मई जनम माह होई। कई जगह 1914 ई. लिखल बा जे सही नइखे। इहाँ के निधन 1989 ई. में हो गइल। अपने के पढ़ाई-लिखाई तुलसी साहित्य विद्यालय कलकत्ता से भइल। अपने कलकत्ता, पटना आ आरा में कई साप्ताहिक पत्र- पत्रिकन के सहायक सम्पादक रूप में काम कइनी। साहित्य लेखन के प्रति अपने के रूचि 1936 ई. के आसपास भइल। ब्रजभाषा आ हिन्दी में लिखे के शुरू कइलीं, बाद में भोजपुरियो में लिखे लगनी। भानु जी आरा से 'गाँव घर' नाम के पत्रिका 1960 ई. में निकाले के शुरू कइलीं जवन 1962 ई. तक लगातार निकलत रहल। बाद में कबहीं-कबहीं निकलत रहल। इहाँ का आजादी मिलला के बाद 'कुँवर सिंह' महाकाव्य के रचना कइनी। बिहार सरकार से पाण्डुलिपि पर सवा सै रूपया के पुरस्कारो मिलल। 1957 ई. में जगदीशपुर में कुँवर सिंह विजयोत्सव समारोह में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के उपस्थिति में महाकाव्य के कुछ अंश के पाठ करके ईनाम सरूप गोल्ड मेडल पवनी। बाकिर 1957 ई. में हरेन्द्रदेव नारायण के महाकाव्य 'कुँवर सिंह' आ डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के 'वीर बाबू कुँवर सिंह' प्रबंधकाव्य आ गइल, जवना से भानु जी आपन महाकाव्य छपवावे के बिचार तेआग दिहलीं। ओकरा के संक्षेप करके बावन छंद में भोजपुर आ कुँवर सिंह के शौर्य के बरनन वाला 'कुँवर बावनी' 1988 ई. में छपवइनी। एह में के 'होला एक पानी के मरद भोजपुरिया' वाला छंद बहुत संदर्भित कइल जाला। इहां के पत्नी राधिका देवी भोजपुरी में कविता लिखत रहीं आ कहानी लिखत रहीं। 1986 ई. में उनका निधन पर शोक कवितन के संग्रह 'रंग में भंग' लिखनी जे ओही साल छपल। इहाँ के कई गो किताब अनछपल रह गइल, जइसे-बरिसायन, अनमोल मोती, इन्सान बदल गइल आ रघुवंशम के अनुवाद। हिन्दी के 'मुकुट माल' भी ना छप सकल। भानु जी के कुँवर बावनी के छंदन के बड़ा प्रसिद्धि मिलल। उहे भानु जी के पहचान बा।

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव 'ढीबरी लाल'

ढीबरी बल्लीलाल नाम से सोहरत पावेवाला बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव के जनम बिहार के चंपारन (अब पूर्वी चंपारन) के गोविंद गंज थाना के नगदाहा गाँव में सन 1905 ई. में भइल रहे। निधन 26 अगस्त, 1985 ई. के हो गइल। शुरूआती शिक्षा गाँवे के प्राइमरी इसकूल में भइल। मिडिल गौरीशंकर मिडिल इसकूल, मोतिहारी से; मैट्रिक जिला इसकूल, मोतिहारी से; आ सी. टी. मुजफ्फरपुर से कइनी। सी. टी. कइला के बाद विशेश्वर एकेडमी, छपरा में शिक्षक नियुक्त भइनी। लगले कुछ दिन बाद गौरी शंकर मिडिल इसकूल, मोतिहारी में बहाली हो गइल। 1934 ई. में भूकम्प भइला के बाद इसकूल व्यवस्था के आदेश मानत रिजाइन करे के पड़ल। तब कुंडल प्रकाशन खातिर किताब लिखे लगनी। ई कितबवा सब कुंडल प्रसाद के नाम से छपत बिकात रहे। एतहीं रहत ढीबरी लाल जी ककहरा सिखावेवाला बाल पोथी- 'हिंदुस्तानी पोथी' अपने बनावल चित्र के साथ तैयार कइलें। एह से खुश हो के कुंडल प्रसाद अपना श्याम लाल प्रेस के व्यवस्थापक पद पर नियुक्त कर देनी। 1942 ई. में प्रेस से अलग हो के ढीबरी लाल जी बी. पी.ब्रदर्स नाम से किताब के दुकान खोलनी आ मुहरो बनावे के काम शुरू कइनी। 1948 ई. में उहाँ का भारतेन्दु प्रेस खोलनी आ आगे चल के 'भारतेंदु' साप्ताहिक शुरू कइलीं जे उनका जीवनकाल के बादो उहाँ के पुत्र सुधींद्र जी चलावत रहनी। कविता प्रेम विद्यार्थीए जीवन में लखार हो गइल रहे। हास्य व्यंग्य वाला तुकबंदी करके संघतियन के सुनावल, मनोरंजन कइल ओही घरी होत रहे। विधिवत पहिलका कविता हेडमास्टर रामशरण उपाध्याय के विदाई पर लिखलें, सभा में सुनवलें आ रोवते हॉस्टल में चल गइलें। पहिला कवि सम्मेलन में दिनकरजी आ नेपाली जी के साथ मंच साझा करे के मिलल। इहाँ के कवितन में हास्य व्यंग्य के प्रधानता रहे, बाकिर भोजपुरी के केतने कवितन में दलितन आ पिछड़न के समस्या आ चिंता लखार बा, सम सामयिक समस्या सोझा आइल बा आ गँवई जीवन के चित्र खड़ा भइल बा। इहाँ के कवितन के कवनो सोगहग संकलन संग्रह ना आइल। 'वतन का तराना', 'बृक्ष रक्षा सम्मेलन' आ 'चंपारन के गीत' नाम के पातर छीतर पुस्तिका निकलली स, जवना में हिंदी भोजपुरी के लमहर छोट कविता दिहल गइल बा। बहुत छोट छोट छंद के लमहर लमहर कविता उहाँ का भोजपुरी में लिखले बानी। गँउवे में रहे के बिचार बा, चंपारन के गीत, डोमटोली, चमरटोली आ नोनिया टोली प्रबंधात्मक कविता अस बाटे। ढीबरी लाल जी के गीत-'लमहर शहरिया के ऊँची अटरिया से डर लागे, अमवा के बगिया में नन्हकी मड़इया सुघर लागे' सांस्कृतिक मंचन पर बड़ा प्रसिध्द भइल, जवना का युवा महोत्सव में राष्ट्रीय पुरस्कार मिलल। 1978 ई. में बिहार सरकार के राजभाषा विभाग अपने के पुरस्कृत कइलस।

रुद्र काशिकेय / गुरु बनारसी

गुरु बनारसी आ रुद्र काशिकेय के नाम से प्रसिद्ध शिव प्रसाद मिश्र के जनम उ. प्र. के सांस्कृतिक नगरी काशी में संवत 1968 विक्रमाब्द में शारदीय नवरात्रि के पंचमी तिथि के भइल रहे । एह हिसाब से सन 1911 ई. के सितम्बर-अक्तूबर महिना हो सकत बा। इहाँ के निधन 01 सितम्बर ,1970 ई. के हो गइल। शुरूआती पढ़ाई-लिखाई घरहीं में भइल। क्वींस कॉलेज से इंटर आ काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एम. ए. तक के पढ़ाई कइलीं। हिंदी आ संस्कृत से एम. ए. मिश्र जी उर्दू, फारसी, बंगला, मराठी, गुजराती आ फ्रेंच भाषा के भी नीक ज्ञान रहे।

बनारस से निकलेवाला 'आज' आ 'सन्मार्ग' अउर पटना से निकलेवाला अखबार 'आर्यावर्त्त' के सहायक संपादक के रूप में कार्य कइनी। ओकरा बाद बनारस के 'हरिश्चन्द्र कॉलेज' में अध्यापन कइनी। हिन्दी-भोजपुरी में कविता लिखला के साथे-साथ नाटककार आ नाट्य कलाकार के रूप में प्रसिद्ध भइलीं। हास्य कविता लिखहूँ में पाछे ना रहनी। भोजपुरी में कवित्त, लाचारी आ गजल लिखत रहीं। काशिकेय जी के भोजपुरी पर आन भाषा के प्रभाव ना रहे। गजल गुरु बनारसी के नाम से लिखत रहीं। भोजपुरी में रिवायती गजल लिखले बानी। भाषा अपना प्रकृत रूप में बा आ छंद चुस्त आ दुरुस्त बाटे। रुद्र काशिकेय के नाम से रउआ 'तेग अली तेग आ काशिका' नाम के एगो कविता संग्रह संपादित कइलीं जे ज्ञान मंडल, वाराणसी से 1964 ई. में छपल। एह संग्रह में तेग अली तेग के तेइस गो गजल, स्वामी रामानंद आ कबीरदास के चार पद, सुकवि अम्बिका दत्त के चार आ रसिक किशोरी के दू गो कजरी आ पॉच चइती, रामकृष्ण वर्मा बलवीर के एगारह विरहा (नायिका भेद) व्याख्या सहित संग्रहित बा। शुरूआत में हिंदी में बारह पृष्ठ में लिखल विद्वतापूर्ण संपादकीय बा। पं. गणेश चौबे एह पुस्तक के संपादन के पद्धति वैज्ञानिक मनले बानी। इहाँ के योगदान एगो बढ़िया संपादक रूप में आ एगो गजलकार रूप में बाटे।

श्याम बिहारी तिवारी ' देहाती '

देहाती जी के जनम बिहार के चंपारन (अब पश्चिमी चंपारन) के नौतन प्रखंड के पिपराही गाँव में सन् 1913 ई. में भइल रहे आ निधन बहुत कमे आयु में 05 अक्तूबर, 1950 ई. में हो गइल। देहाती जी के पिता के नाम शिवधारी तिवारी रहे। देहाती जी के पहिरावा ओढ़ावा आ रहन सहन पर पूरा देहाती छाप रहे। शुरूआती पढ़ाई गाँवे में भइल। ओकरा बाद बेतिया में पढ़नी आ राज इसकूल से मैट्रिक के परीक्षा पास कइनी। 1932 ई. में अयोध्या के विद्वत समिति से हिंदी विशारद आ 1934 ई. में हिंदी शास्त्री के उपाधि मिलल। सन 1937 ई. में सी. टी. के परीक्षा पास कइनी। देहाती जी के छोटहन जिनिगी के बाकी समय शिक्षण आ हिंदी भोजपुरी के प्रचार प्रसार में बीतल। देहाती जी स्वनामधन्य कवि गोपाल सिंह नेपाली द्वारा स्थापित संस्था 'कविवासर' के संचालन कइनी। एह संस्था से प्रकाशित साहित्य संकलन 'कविता' के संपादन कइनी। सन 1943 ई. में बेतिया के बँसवरिया में अपना मकाने में साहित्य सागर प्रेस खोलनी आ 'सागर' नाम के साप्ताहिक पत्रिका के शुरूआत कइनी जे अथार्भाव में आगे ना बढ़ सकल। चंपारन जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उहाँ का ओह समय कार्यालय मंत्री रहलीं। पं. गणेश चौबे देहाती जी के कविता काल पनरह बरिस के, 1936 ई, से 1950 ई. तक मनले बानी आ ई बतवले बानी कि उहाँ के बेसी रचना भोजपुरिए में करत रहीं। कवि सम्मेलन के मंच पर उहाँ के बहुत पूछ रहे आ माइक पर खड़ा होखते लोग हँसे लागत रहे। अइसे त कविता के पाँतियन से हँसी छूटत रहे, पर ओकरा गूढ़ार्थ पर बिचार कइला से दाँते अंगुरी दबावे के पड़त रहे। उर्दू के बहरन के प्रयोगो उहाँ का करत रहीं। देहाती जी के रचनन में युगबोध बाटे, दुसरका विश्वयुद्ध, समाज आ देश के दुर्दशा के चित्रण के साथे साथ शासन आ व्यवस्था पर चोट बाटे। हिंदी साहित्य सम्मेलन के बौंसी (भागलपुर) अधिवेशन में देहाती जी के प्रसिध्द कविता- **'चइत चाँदनी चन्द्रमुखी के झगड़ा अब फरिआते नइखे / गगरी भरल खिंचाते नइखे'** सुन के दिनकर जी टिप्पणी कइले रहीं - 'देहाती, कवि तुम्ही हो। हम तो पापड़ ही बेलते रह गये।' देहाती जी के कवितन के संग्रह तीन भाग में 'देहाती दुलुकी' नाम से संग्रहित रहे, जवना में से चउदह कवितन के संग्रह भाग-1, 1947 ई. में छपल। बाकी दू भाग अनछपल रहल। देहाती जी के कवितन के महत्व एही से पता चलत बा कि 'भोजपुरी के कवि और काव्य' में आ बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य संग्रह में सम्मिलित कइल गइल बा।

रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त '

अलमस्त जीव रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के जनम बिहार के चंपारन (अब पूर्वी चंपारन) जिला के गोबिंद गंज थाना के दूबे टोला गाँव में 05 अगस्त, 1919 ई. के एगो जमींदार परिवार में भइल रहे, जबकि निधन 02 फरवरी, 1987 ई. के जमशेदपुर में हो गइल। अपने हिंदी से एम. ए. के परीक्षा पास कइलीं आ नेपाल के बीरगंज में एक कॉलेज के हिन्दी विभाग में संस्थापक अध्यापक रूप में बहाल हो गइलीं। नेपाल में जब अमेरिका से कृषि विशेषज्ञ लोग आधुनिक खेती के बारे में बतावे आइल त भाषा समस्या आइल। अलमस्त जी के अमेरिकन लोग के भोजपुरी सिखावे लागि प्रतिनियुक्ति भइल। अलमस्त जी तत्कालीन नेपाल महाराजा के विरुद्ध भोजपुरी में कविता लिखनी, जवना पर 'सूट एट साइट' के आदेश हो गइल। इहाँ का पता चलल त छिपत छुपत घरे आ गइलीं। तब तक 1957 ई. के आम चुनाव आ गइल। इहाँ का गोबिंद गंज बिधान सभा से चुनाव लड़ गइनी आ हारे के रहे हार गइनी। ओकरा बाद अलमस्त जी मुजफ्फरपुर जिला के साहेबगंज हाई इसकूल में शिक्षक नियुक्त भइलीं जहाँ 1968 ई. तक काम कइनी, ओकरा बाद वर्कर्स कॉलेज जमशेदपुर में हिंदी के प्रवक्ता में बहाल हो गइलीं, जहाँ से रिटायर भइलीं। अलमस्त जी होम्योपैथी के जानकर रहीं आ चिकित्सा करत रहीं। रिटायर भइला के बाद पाँच सै के वृति पर टाटा में मृत्यु पर्यंत रह गइलीं। अलमस्त जी के दू गो बिआह रहे, एगो बेटी रही। परिवार साथे रहते ना रहे। अलमस्त जी छात्र जीवन से हिंदी भोजपुरी में कविता रचत रहीं। उहाँ पर प्रगतिशीलता के प्रभाव रहे। **अलमस्त जी के गीत 'तोहरा घरवा में पइसल बा चोर अँजोर करके देख भइआ' आजादी के पहिले घर-घर में गूँजे लागल रहे। अइसे व्यंग्य कवि के रूप में बड़ा नाम रहे। ओही व्यंग्य के चलते 'सूट एट साइट' के आदेश रहे।** 1953 ई. में छपल 'उदयन' नाम के काव्यपुस्तक में हिंदी भोजपुरी दुनों के कविता रहे। सस्वर कविता पाठ करीं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पाँचवा अधिवेशन के अवसर पर कवि सम्मेलन के अध्यक्षता अपने कइले रहीं। मरे से दू दिन पहिले मोतिहारीए से कवि सम्मेलन के अध्यक्षता कर के लवटल रहीं। अपने के लिखल हिंदी आ भोजपुरी गद्य बड़ा सशक्त बा।

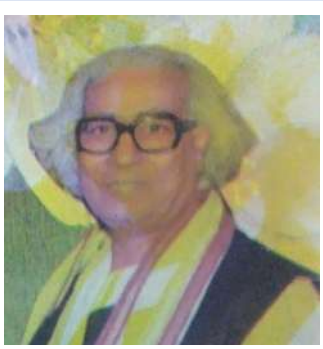

राहगीर

भोजपुरी के प्रसिद्ध गीतकार राहगीर के जनम उ. प्र. के देवरिया जिला का फाजिलनगर तहसील के मधुरिया गाँव में संवत 1979 में भइल रहे। एह हिसाब से 1922 ई. भइल। शुरूआती पढ़ाई लिखाई गाँवे में भइल। अपने राजनीति में सक्रिय हो गइल रहनी आ कॉग्रेस पार्टी द्वारा चलावल जाए वाला आंदोलन में भाग लेत रहलीं। लगभग 1952 ई. तक राजनीति में सक्रिय रहला के बाद मोहभंग भइल आ उहाँ का राजनीति छोड़ के साहित्यिक आ सामाजिक आंदोलन से जुड़ गइलीं। भोजपुरी साहित्य के त अपने तन-मन-धन से सेवा करे लगलीं। अपने भोजपुरी के गीतकार के रूप में बड़ा सोहरत भइल। इहाँ के लिखल गीत बड़ा सरस आ सुमधुर होला। गीत लिखला के अलावे भोजपुरी गीतन के संकलन आ संपादन में अपने के रुचि रहल बा। कवि सम्मेलन के मंच से श्रोता लोग के बान्हे के शक्ति राहगीर जी में रहल बा। अपने के द्वारा संपादित गीत संकलन के नाम बा- 'आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार' (1958 ई.)। एह गीत पुस्तक में भोजपुरी 41 कवि लोग के 90 गो गीत संग्रहित बा। एह में कवि लोग के छोटहन परिचय देत ओह लोग के रचना दिहल गइल बा। राहगीर जी द्वारा दोसर संपादित संकलन बा- 'भोजपुरी के नये गीत और गीतकार' (1963 ई.)। एह संकलन में 42 गो नया कवि लोग के हिन्दी में परिचय देत ओह लोग के गीत रचना दिहल गइल बा। 'राहगीर के गीत' नाम से राहगीर जी अपना गीतन के संग्रह निकलले बानी। एह में प्रकृति चित्रण चाहे ऋतु पर लिखल गीतन के सङे सङे विकास गीतन के संकलित कइल गइल बा। एकरा अलावे राहगीर जी के लोक कथा सब के अपना ढंग से प्रस्तुत करेवाला चार गो किताब बा- 'गाँव की लोककथायें'; 'गाँव की कहानियाँ'; 'तीन भाई तीन रास्ते' आ 'अन्धे का भाग्य'। जब 1964 ई. में बनारस में डॉ. स्वामीनाथ सिंह' भोजपुरी संसद नाम के संस्था स्थापित कइनी त ओह संस्था के मंत्री बनावल गइल। ई संस्था के प्रकाशन आ आयोजन लेके कुछ दिन तक बहुत धूम रहल।

दूधनाथ शर्मा 'श्याम'

भोजपुरी के अनन्य सेवी श्याम जी के जनम उ. प्र. के देवरिया जिला के पिंडी में 02 जून 1917 ई. के भइल रहे। निधन नवम्बर, 1993 में हो गइल। मध्यमा के परीक्षा पास कइलीं। देश के आजादी के लड़ाई में योगदान कइलीं। परम्परागत खेती किसानी से जुड़ल रहलीं आ लेखन के काम आजीवन कइलीं। राजनीतिक पद पावे के कवनो लालसा ना रहे। परिवार चलावे लायक गृहस्थी रहे। खादी के मोटिया कुरता-धोती, गोड़ में चप्पल आ कान्हे लटकल झोरा लेले उहाँ का साहित्यिक आयोजन में पहुँच जात रहीं। मस्त मौला मनई रहीं श्याम जी। श्याम जी लिखित सोरह किताबन के प्रकाशन भइल बा- दिग्विजय नाथ (महाकाव्य), बाबा राघव दास (महाकाव्य), द्रौपदी (महाकाव्य), पत्र पुष्प (कविता संग्रह), ग्रामगाथा (कविता संग्रह), हिमगिरि के नेवता (कविता संग्रह), श्रद्धाँजलि (कविता संग्रह), सुदामा यात्रा (प्रबंधकाव्य), संतन के थाती (कविता संग्रह, जै बजरंग बली (कविता संग्रह), राम सरोवर (कविता संग्रह), उघटा पुरान (कविता संग्रह), लहालोट (कविता संग्रह), कचरकूट (कविता संग्रह), बंग युद्ध (कविता संग्रह) आ कृषि काव्य (कविता संग्रह)। एह सब के अलावे अउर किताबन के पांडुलिपि अनछपल पड़ल रहे। पांडेय कपिल के कथन बा कि मूलतः हास्य व्यंग्य के कवि रहीं श्याम जी, जिनका पास अभिव्यक्ति के एगो तीख भंगिमा रहे, जवना से उहाँ के कविताई चोख हो जात रहे। गँवई बिम्बन के संयोजन से लैस श्याम जी के कविता के मौलिकता बढ़ जात रहे। श्याम जी आशुकवि रहीं, जवना के प्रशंसा डॉ. रामदरश मिश्र जइसन विद्वान अपना हिंदी किताब में कइले बानी।

दंडी स्वामी विमलानंद 'सरस्वती'

विमलानंद सरस्वती जी के संन्यास लेवे के पहिले के नाम अवध बिहारी सुमन रहे। उहाँ के जनम 14 जनवरी, 1921 ई. के बिहार के शाहाबाद (अब बक्सर) जिला के मँगराँव गाँव में भइल रहे आ निधन 2007 ई. में भइल। अपने 1940 ई. के आस पास कॉग्रेस के सदस्य बन के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़लीं। आगे चल के स्वामी सहजानंद के किसान आंदोलन में सक्रिय हो गइलीं। बक्सर से निकले वाला पत्र 'कृषक' से जवन लेखकीय जीवन शुरू भइल, ऊ संन्यास ग्रहण कइला के बादो चलत रहल। किसान आंदोलन के चलते उहाँ के कई बेर गिरफ्तारी भइल। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत हो गइलीं। जेल जीवन में आ फरारी जीवन में उहाँ के लेखन कार्य चलत रहल। स्वामी जी सहजानंद सरस्वती के सङे -सङे महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ. उदय नारायण तिवारी, बाबा नागार्जुन के सम्पर्क में रहनी। **आजादी मिलला के बाद 1948 ई. में भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल के सनद' उहाँ का दिहलीं, जवना में दस गो कहानी रहे।** उहाँ के लिखल हिन्दी मुक्तकन के संग्रह 'मकरन्द' ओही साल छपल। 1946 ई. से 'कृषक' के संपादन के भार स्वामी जी के मिल गइल रहे। राहुल जी आ नागार्जुन के साथ कई पुस्तकन के संपादनो कइनी। भोजपुरी में स्वामी जी एगो उपन्यासो 'जिनगी के टेंढ़ राह' रचले रहीं जे पत्रिका में धारावाहिक छपल। भ्रमण करके आपन ज्ञान के पुष्ट करत रहलीं। 1956 संन्यस्त भइलीं आ आगे चलके सहजानंद स्वामी के समाधि लिहला के बाद राजगुरुमठ, शिवालाघाट, वाराणसी के मठाधीश बनलीं। अपने के भोजपुरी खातिर कहानी के पहिला किताब देवे के श्रेय त बड़ले बा, ओहू से बढ़ के श्रेय के काम भगवान बुद्ध के चरित पर बृहदाकार महाकाव्य 'बउधायन' के रचना बा, जवन राहुल बाबा, डॉ. उदय नारायण तिवारी आ बाबा नागार्जुन के प्रेरणा से अपने रचलीं। अश्वघोष के संस्कृत महाकाव्य 'बुद्धचरितम' के सैंकड़ो-सैंकड़ो बरिस बाद कवनो भाषा में बुद्ध चरित पर महाकाव्य लिखे के श्रेय राउर बा। एगो शैव परम्परा के संत हो के बुद्ध के संपूर्ण जीवनवृत पर बत्तीस सर्ग के ई महाकाव्य भोजपुरी के कालजयी रचना बा। एकर प्रकाशन भोजपुरी अकादमी, पटना कइलस। अपने 1965 ई. में रास बिहारी राय शर्मा के महत्वपूर्ण व्याकरण 'भोजपुरी व्याकरण' के प्रकाशन के अर्थभार उठवलीं। दंडी स्वामी जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आरा में तेरहवाँ अधिवेशन आ सत्र के अध्यक्षता कइलीं। भोजपुरी अकादमी पटना अपने के ताम्रपत्र देके सम्मानित कइलस। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपने के रामनगीना राय पुरस्कार दिहलस। अउर कई सम्मान मिलल।

राम बचन लाल श्रीवास्तव

श्रीवास्तव जी के जनम बिहार के शाहाबाद (अब रोहतास) जिला के रामगढ़ थाना के बीरगढ़ी गाँव में संवत 1977 के भादो में अनंत ब्रत के दिन भइल रहे। एह हिसाब से 1920 ई. के सितम्बर महीना भइल। इनका पिताजी के नाम कपिलदेव नारायण श्रीवास्तव आ माताजी के नाम अशर्फी देवी रहे। परिवार पहिले के किसान रहे आ डुमराँव राज के कारिंदा कहात रहे। अपने के पढ़ाई लिखाई काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एम. ए. तक भइल। रामबचन लाल जी बी. टी. कइलीं। कुछ दिन डुमराँव में रहला के बाद कलकत्ता चल गइलीं जहाँ इहाँ के पिता जी पहिले से रहे लागल रहीं। कलकत्ता में इहाँ के जिनगी के बेसी समय बीतल। 4, शोभाराम बैसक स्ट्रीट स्थित माहेश्वरी विद्यालय में शिक्षक हो गइलीं। एक शिक्षक के रूप में अपने के खूब आदर सम्मान मिलल। राम बचन लाल श्रीवास्तव कई एक भाषा के जानकार रहीं। भोजपुरी हिंदी के अलावे अंग्रेजी, उर्दू, बंगला, संस्कृत, गुजराती उहाँ के नीके जानत रहीं। संगीत, गायन, वादन, चित्रांकन, रामायण पाठ, भाषण, प्रवचन में रामबचन लाल जी के मन खूब रमत रहे। अपने के लिखल कई गो किताब छप चुकल बा। गीत संग्रह- विजया आ पाटल अउर प्रबंधकाव्य-कुणाल, बनवासी के शक्ति साधना आ श्याम शतक। बंगला के 'गीतांजलि'; संस्कृत के 'मेघदूत' आ अंगरेजी 'रुबाइअत उमरखैयाम' के भोजपुरी अनुवादो इहाँ का कइले रहीं। हिंदी आ भोजपुरी के दरजन भर किताब अनछपल रह गइल। रामकथा मंदाकिनी, महाभारत आ गौर मुरारी सब महाकाव्य ह। एकरा अलावे दस गो अउर किताब छपे खातिर तैयार रहे जे छप ना पावल।

गीत

राज नाथ सिंह, राकेश

कइसे आई हम तोहरा ठांव !

कइसे आई हम तोहरा ठांव!
प्रभू जी,पैकड़ पड़ल मोरा पांव!!

माया मोह बा बन्हले फन्दा
काम क्रोध मद संगे बन्दा
छल कपट से भरल नजरिया-
बीतल उमर कांवे कांव
प्रभू जी----------

मइली चादर धोवन चाहीं
सत्य के साबुन मिलत नाहीं
भरल पुरल बाग बगइचा-
हमरा लागे उदांव
प्रभू जी---------

कहत राकेश सबसे हारी
द्रोपदी तबऽ तोहे पुकारी
केहू ना आपन तोहरा बिना-
पिपरो ना दे ताटे छांव
प्रभू जी-----------

टेघरा,छपरा, बिहार

जयंती विशेष - मोती बीए
प्रकाश उदय

तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा...

कवि जी कविता में ई गवले

ओहू में, उनुकर पहचान जवना से बनल, ऊ उनुकर गीत ह। आ ई त बाकायदा इतिहास में दर्ज बा कि सिनेमा के दुनिया के भोजपुरी गीतन से जान-पहचान करवावे के सेहरा उनुके माथे बन्हाइल बा। 'कठवा के नइया बनइहे मलहवा, नदिया के पार दे उतार' भा 'मोरे राजा हो ले चलऽ नदिया के पार' भा 'मँह-मँह महकेला फुलवरिया, बन-ठन चललू कहाँ गुजरिया' भा 'अइसन दुनिया अइसन लोग रामजी बनवले रहें ना' भा 'ससुरा से नइहर जाइब कवन मुँह देखाइब' भा 'चिरई बड़ा जुलुम तू कइलू घर में खोंता लगवलू ना' जइसन उनुकर जाने कतने गीत हिन्दी सिनेमा के दुनिया में भोजपुरी के परचम बन के फहरल।

जन्मतिथि- 01 अगस्त, 1919
पुण्यतिथि - 18 जनवरी, 2009

लागीं त लागले रहीं- एह लाइफ-स्टाइल के कायल 'लगे रहो मुन्ना भाई' वाला मुन्ना भाई त बाद में अइले, मोती बीए बहुत पहिले भइले। साहित्य के साधे के नधले, त जबले रहले, जतना तरह से सँपरल, आ जतना तरफ से, नधले रहले, नधाइले रहले- हिन्दी-उर्दू में, भोजपुरी में, अंगरेजियो में। कविता के मंच प, सिनेमा के पर्दा प, पत्र-पत्रिका-पुस्तक के पन्ना प। अपना चिठियाँव तक में। गीत-गजल-नजम-रुबाई-कता-सानेट-दोहा-मुक्तक-मुक्तछंद-सगरो दवर बनवले। हाइकू के हवा चलल त ओहू में आपन कुछ-ना-कुछ ओसइबे कइले। महाकाव्यो-ओर, एक्के सर्ग सही, चलिए के मनले। गद्य के छोड़ देले होखस, ईहो ना। अनुवादो कइले, काव्यान्तर-संस्कृत से, अंग्रेजी से। हिन्दी में, भोजपुरी में। बातो-बर्ताव में, सुने में ईहे आवेला, कि साहित्येतर, भरसक त नाहिंए भइल कइले।

जहाँ सूझ-सृजन के अइसन दीवानगी, उहाँ बूझ-चयन के जिम्मेवारी, जरूरी बा कि जेकरा एकर परल होखे सेही उठावे। मोती बीए के नइखे परल। उनुका खातिर रचे के एक्के मतलब, रचत रहल। उनुका तरफ से उनुकर सब कुछ सबके सोझा पसरल आ परोसल - 'तिनका-तिनका शबनम-शबनम'। अपना सब कुछ में से कुछ-कुछ के तरफ कुछ अधिका अखेयान खातिर अपना बाकी सब कुछ में से कुछ-कुछ के हटावतो-घटावत राखे के काम कविताइए में शामिल, मोती बीए के कवि-मन ई माने खातिर कतई तइयार ना। माने के चाहीं, ना माने के चाहीं- एकरा के लेके बहस हो सकेला, बाकिर ई त तय बा कि कुछ कवि मानेले, कुछ ना मानेले। मोती बीए ना मानेले। ईहो ना कि जे मानेला ओकरा खाता

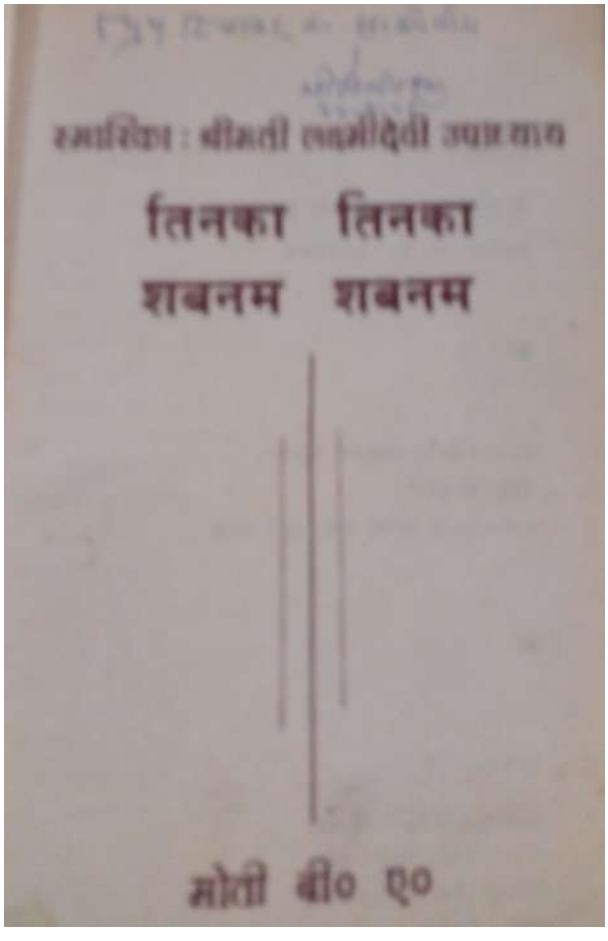

में गैरजरूरी कवितन के कवनो कमी होखे, आ जे ना माने ओकरा किहाँ जरूरी कवितन के कवनो अकाल लउके। अपना आ अपना समय खातिर तमाम जरूरी कवितन से लैस मोती बीए, बेशक एगो बहुत जरूरी कवि के रूप में आपन जगह बनवले आ नइखे कहल जा सकत कि उनुकर जवन कविताई केहू-केहू के गैरजरूरी-मतिन लागेला, ऊहो उनुका जरूरी कवितन खातिर ओतने जरूरी नइखे!

मुश्किल ई बा कि अपना सब कुछ के लेले-देले चले वाला कवियन के बारे में बतियाईं, त ओनहन के बारे में कुछ उजागिर होखे चाहे ना, अपना बारे में त होइए जाला कि आखिर कवना नजरिया से आ कवना-कवना जरिया से बतियावे के राह बनावल गइल। अइसना में निरापद त ईहे होई कि उनुका कविताई के ओही हिस्सा तक अपना के हदबन्द राखल जाय, जवना में अनोरछोर होखे, चर्चा के आ चर्चा खातिर चुने के गौं-गुंजाइश। अइसन इलाका मोती बीए किहाँ भोजपुरी कवितन के बा। ओहू में, उनुकर पहचान जवना से बनल, ऊ उनुकर गीत ह। आ ई त बाकायदा इतिहास में दर्ज बा कि सिनेमा के दुनिया के भोजपुरी गीतन से जान-पहचान करवावे के सेहरा उनुके माथे बन्हाइल बा। 'कठवा के नइया बनइहे मलहवा, नदिया के पार दे उतार' भा 'मोरे राजा हो ले चलऽ नदिया के पार' भा 'मँह-मँह महकेला फुलवरिया, बन-ठन चललू कहाँ गुजरिया' भा 'अइसन दुनिया अइसन लोग रामजी बनवले रहें ना' भा 'ससुरा से नइहर जाइब कवन मुँह देखाइब' भा 'चिरई बड़ा जुलुम तू कइलू घर में खोंता लगवलू ना' जइसन उनुकर जाने कतने गीत हिन्दी सिनेमा के दुनिया में भोजपुरी के परचम बन के फहरल। हिन्दी फिल्मन के भोजपुरी गीतन से त ऊ सजइबे कइले, हिन्दी फिल्मन के हिन्दियो गीतन के ऊ भोजपुरी के भाषा-बल से तेजवन्त कइले। फिल्मी गीत, ठीक बा कि एगो सँउसे समूह के समिलात के श्रम के नतीजा होला, ओकरा सफलता के सेहरा केहू एक के कपारे ना बन्हाय, बाकिर ई त बड़ले बा कि फिल्मी गीतन में शब्द के महिमा के कुछुए गीतकार लोग कायम राखल, आ मोती बीए ओही कुछेक में से एक। एह बात के महातम तब अवरू बढ़ जाला जब, एगो समूह-कर्म के रूप में परोसाय वाला, भोजपुरी गीत त कुछ खासे खरखाही के साथे, अक्सरहाँ, एगो सामूहिक दुष्कर्म मतिन जनाय लागेला, जवना में शामिल त खैर, गवइया, बजवइया, नचवइया से लेके सुनवइया तक, सब होला, बाकिर जवना के समहुत के सेहरा रचनिहारन के कपारे चढ़ के सबसे पहिले उन्हनिए के लंगटपन के जाहिर-उजागिर करेला। अइसना में, जाहिर बात कि मोती बीए भोजपुरी के लोक-लुभावन गीतन के एगो अइसन प्रजाति के गीतकार जवन कले-कले दुलम भइल चल जाता।

तब्बो, मोती बीए अपना जवना गीतन के नाते मोती बीए, ऊ उनुकर ऊ गीत जवना के ऊ गायक-गायिका आ नायक-नायिका

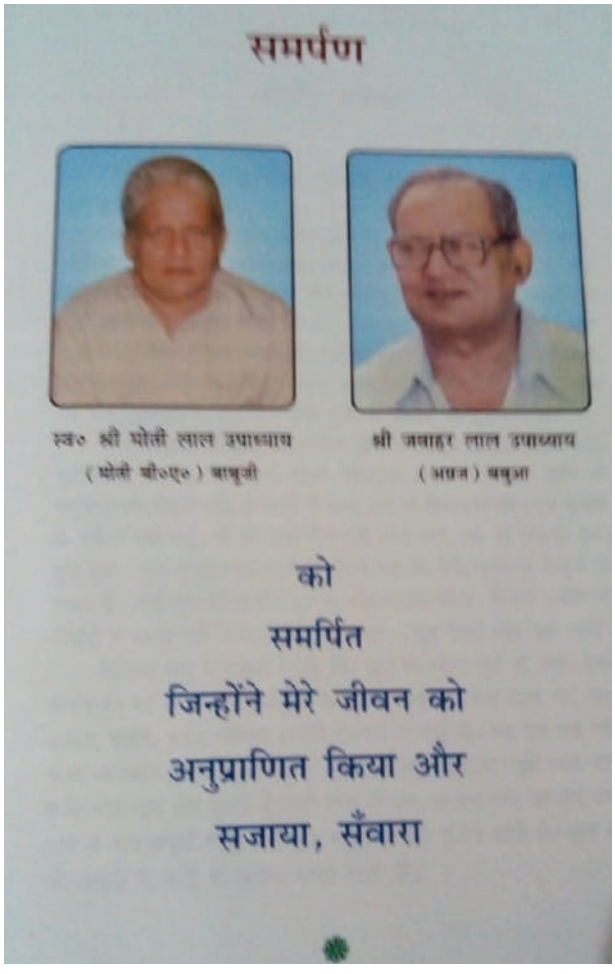

लोग के सहूलियत के हिसाब से अक्सरहाँ नइखन रचले। ऊ गीत अपना आकार आ प्रकार से, अक्सर, गीत विधा के जवन हदबन्दी ह, तवना के दरेरा देके बहरियाऽ जाले स। गीत में अपना कहन के बटोर के रखला के जादे बेधक मानल जाला, बाकिर मोती बीए, अक्सर एकरा उलट, एक त कि पसार के रखले आ दोसरे कि ओह पसारा के पोर-पोर से बिन्हले, बेधले। कविता के कहन के गितियावल कइसे जाला, ई त केहू उनुके से सीखे। जइसे केहू-केहू खुला गला से गावे वाला होला, 'खुलगल' गायक, ओसहीं मोती बीए खुला हाथ से लिखे वाला, 'खुलहथ' गीतकार। कहला आ गवला के जवन अलग-विलग क्रिया बा तवना के एक-दुसरा में, एक-दुसरा से गूँथ देबे के, एक-दुसरा में सक्रिय क देबे के कवनो खासे तरकीब उनुका आवेला। सेमर के फूल, महुआबारी, भदई दँवात बा, अँजोरिया, अमड़ा के फेड़, कटिया के सुतार, निझरि गइले अमवा आ मृग के लेके मृगतृष्णा, मृगकस्तूरी, मृगबीन, मृगछाला जइसन उनुकर कतने रचना बा जवना में पाठ के प्रवाह के निनाद के ऊ संगीत के संगति से नियत कइले बाड़े आ गायन के निराकार आलाप के संलाप से साकार।

अइसन अहथिराह ई गीतकार कि जेकरा तरफदारी में ओकरा तरफदारी में खुल के आ जेकरा तरफमारी में ओकरा तरफमारियो में ओतने खुल के। जइसे आम, नीम, महुआ, कदम्ब, बाँस, अँवरा के तरफदारी में ओसहीं सेमर, बबूर, अमड़ा के तरफमारी में। आ अँसहीं ना, अँइसे-ओंइसे ना, तनल तर्कन के साथे, सुर में आ ताल में तनल तर्कन के साथे। **हरियरी के नाँव प हर हरियर के स्वागत से परहेज के ई जवन समझ बा तवन काश कि हमन के सरकार आ ओकरा अफसरानो के होइत आ ऊ लोग आम-महुआ के कटाई के घाव के बबूर-यूकिलिप्टस से भरे के कलाबाजी देखावे से बाज आइत!** बहरहाल, ऊ लोग बाज आवे चाहे मत आवे, मोती बीए अपना सुगना के सेमर के फूल से लपटाय से तरह-तरह से, बेर-बेर बरिजे से बिल्कुल बाज नइखन आवत आ अतने ना, अपना बरजला प ऊ एह बरज चुकला के बादो कायम बाड़े, एकर इयाद ऊ तब दियावत बाड़े जब सेमरे के फेड़ लेखा एगो दोसर, अमड़ा के फेड़ के पा के, ओहू से परे-परे रहे खातिर चेतावे से बाज नइखन आवत। रचना में, रचना से चेतावे के रेवाज कवनो आज के ना ह, आ मोती बीए के, आज के कहाय के बेताबी में काल्ह से कन्नी कटाऽ लेबे के मन बुला रंचक ना। सोचे के, सवाल उठावे के, सवालन से जूझे के आ ओनहन के जबाबो जुटावे के मशक्कत के कविता के ताना-बाना में बुनत-गूँथत ऊ ना अकुताले ना अकुताय

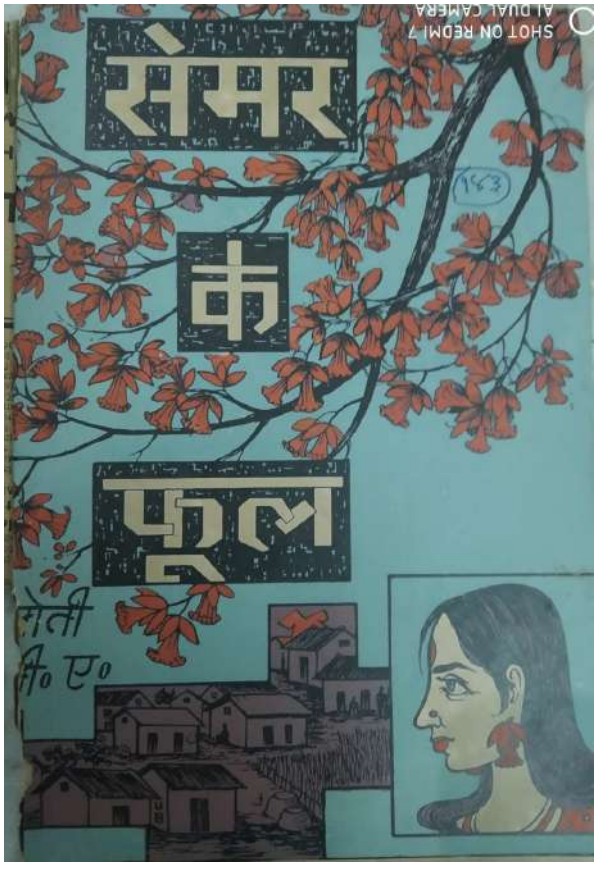

भरोसा के बले, कि ओह भरोसा के रखवइयन के बले, कि सुधि कहाय वाला समीक्षक बिरादरी से अलोता रह गइला के बले ! मोती बीए, ईहे ना कि रीति-नीति के, सनातन टाइप के सत्य आ सारतत्त्ववत बातन के अपना कवितन में बिना कवनो झिझक के कहेले, ईहो कि एह कुल्हि के कविता में अपना कहलको के डंका के चोट प कहेले, 'जइसे दिहलें ओंइसे पवले/कवि जी कविता में ई गवले/ए संसार में ना चलेला उधार सजनी...'। बड़ा ठोस, ठन-ठन ठसक के साथे ई कवि 'कान्ता-सम्मित' कहे के सुझाव के एकोराहाँ ठेल के अपना कवि-सम्मित लहजा में आपन देशना परोसत रहेला। जइसे - 'दुनिया में केहू के ना मेहनत बेकार बा/जेही धाई ऊहे पाई, एही के बजार बा/छोड़ऽ सबके कहल-सुनल, आपन ल सहारा/तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा...'। जइसे -- जब ले प्रेम ना उपजी हिय में, भोर न तब ले होई/सुकवा झूलत रही अकासे, दूबि न मोती पोई/दिन जो उगबो करी त मुँह पर घिरल अन्हरिया रही /बहबो करी बयार त

मृगा - तृष्णा

तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा

तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा

तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा

देले। अपना भोजपुरी आ अपना भोजपुरियन प ई भरोसा कि जीवन-दर्शन जइसन भारियो-भरकम चीज के ऊ कविताई में आ कविताई के जरिए पचाऽ सकेले, मोती बीए के बहुते कामे आइल बा। पता ना पंत जी के 'नौका-विहार' जइसन कवितन के आखिर के लइनियन के फिलासफराना अंदाज कुछ लोगन के पचावे के ओही बेंवत के ना भइला के चलते ना रुचेला कि कहलके में अइसन कवनो कसर रह गइल बा कि सँउसे कवितवा में पेहम होखे के बजाय ऊ अलगे से अँटकल-लेखा रह गइल बा। ईहो हो सकेला कि असल में ऊ अलगे से अँटकल ना होखे, ईहो हो सकेला कि कभी-कभी आ कहीं-कहीं कुछ-कुछ से कुछ-कुछ के अलगे से अँटकल रह गइलका कवनो जुलुम ना होखे, जुरुम ना होखे, कवनो जरूरत के तहत होखे, जरूरी होखे। आ होखे के त खैर, ईहो हो सकेला कि काव्य-भाषा के रूप में खड़ी बोली हिन्दी के अभी नवहर भइला के भोगदंड पंत जी के भोगे परल होखे, ओह नवतुरिया जुबान में ओइसन कवनो बात कुछ लोग के सहले ना सहाइल होखे। बाकिर पंत जी के एह भोगदंड भोगला के बदला, पंते जी लेखा लमहराह गीत-रचना के व्यसनी मोती बीए भरखर ले लेले बाड़े, पता ना अपना काव्य-कौशल के बले, कि अपना भोजपुरी के बले, कि भोजपुरियन के गति-मति प अपना

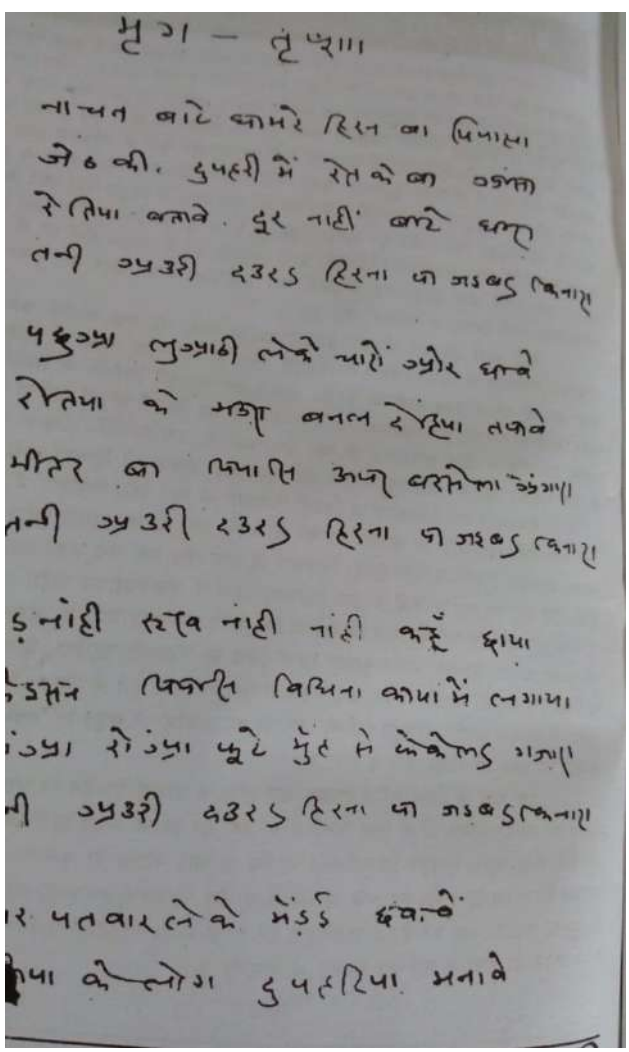

बरबस बोझ अगिन के ढोई...'। जइसे - 'पइसो के हाँड़ी इहँवा ठोंकि के किनाला/चीन्हि के परखि के बेवहार कइल जाला/कब ले चली धोखा-धड़ी, कब ले अन्हेर...'। जइसे - 'अपना ढोवहीं भर बान्हीं जी गठरिया/सँवरिया, लामे जाए के परी...'।

बाकिर अइसन-अइसन जाने कतने जइसन के उनुका कविताई में अइला-भइला के माने ई ना कि अइसन-ओइसन वाला जइसन-तइसन जइसन मोती बीए किहाँ हइए ना। जइसे उनुकर एकाध गो ऊ दोहा जवना के ऊ अपना जाने में आरक्षण के खिलाफ खड़ा कइले, बाकिर जवन खड़ा हो गइल खुद उनुके खिलाफ। जसहीं ऊ 'आरक्षण के जोर प खीर चाँपि ले आजु/कोइला हीरा होय ना, चाहे जतना माँजु' जइसन कवनो बात कहेले, ओसहीं हमन के सोझा से कवि मोती बीए हर लेल जाले आ कवनो मोती लाल नाम के उपाध्याय आदमी धर देल जाले। अइसने कुल्हि रचना साहित्य के दुनिया में अलगा से दलित साहित्य के एगो जरूरत के कायम कइले राखेला। बाकिर ईहो तय बा कि अइसन कुल्हि रचना मोती बीए के कवि-कर्म के ना त आधार बने 'भर' बा ना बने 'लायक' बा। असल में कवि के रूप में मोती बीए अतना ईमानदार कि अक्सर उनुकर कविताई अदेर ई उजागिर क देला कि कवि ओमें मौजूद बड़लो बा कि ना। अँइसे, कि जइसे कि बिना कवनो मेहीनी में गइले, मुँह में आइल आ ना रोकाइल जइसन, ई 'कोइला हीरा होय ना' वाला दोहवा अपना मरियलपन से अपना खिलाफत के फोंफड़ आ फौरी भइलका के बताऽ देत बा। अइसना में जे बूझ-चयन के जिम्मेवारी उठावे, ओकरा खातिर जरूरी बा कि ऊ देखे कि कवि कहाँ 'असर में' बा आ कहाँ 'असरकर' बा, कहाँ भाव-भरल बा आ कहाँ भावुकता में भभरल भर बा। जहाँ भाव ना, भँड़ास भर, तहाँ काव्य ना, काव्याभास भर आ कवि-कर्म के मूल्यांकन के आधार बनी त काव्य बनी, काव्याभास त बनी ना। ओसहूँ, कवनो प्रबल बहाव में कवनो निबल बहाव, एक त कि असंभव नइखे, दोसरे कि मोती बीए किहाँ ऊ, ईहो ना कि जदा-कदा, इक्के-दुक्का बा, ना त अक्सर त उनुकर बहाव आपन, बहे आ ना बहे के, बहाव के साथे भा उलट, चले आ ना चले के उनुकर निर्णय आपन। हँसे, जेकरा पानी के आस में रेत प धउरत हरिना पर हँसे के बा, जेकरा रोवे के बा रोवे, एकरा के माया समझ के जेकरा निर्वेद में जाय के बा जाय, मोती बीए के त एह हरिना के पीठ थपथपावे के बा, ओकरा के रोक-छेंक के ओकर भरम नइखे तूरे के, ओकरा धउरलका के अनेर नइखे बतावे के, बलुक ओकरा के एह भरोसा से भरे के बा कि 'तनी अउरी धउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा'। जेकरा पियास बा, पानी के आस में ओकरा हर प्रयास के कवि के अटूट समर्थन बा, जन-मत आ जगत-मत के एकदम्मे खिलाफो जा के, 'तोहरो दरद दुनिया तनिको ना बूझे/कहेले गँवार तोहके झुठहूँ के जूझे/जवना में ना बस कवनो, ओमें कवन चारा...'। मोती बीए रंचक ना राजी कि जवन अपना बस में बा, धउरल, तवनो तज के हरिना बेचारा बन के बइठ जाय। बाकिर ईहो भुलाय लायक नइखे कि ऊहे मोती बीए, जे एगो समझदार बइठारी में पियासे तड़प-तड़प के मर जाय के बनिस्पत एगो नासमझ आमरण धउरान के तरफदारी में ठाढ़ बाड़े, ऊहे मोती बीए, ओही हरिना के अपने नाभि के कस्तूरी के जोह में जहुअइला के जरिको बर्दास नइखन करे पावत, 'अपना चिझुइया के जेही नाहीं बूझी/दुनिया में ओकरा के केहू नाहीं पूछी/बाड़ऽ तू भुलात होके एतना सयाना/चारो ओरिया खोजि अइलऽ पवलऽ ना ठेकाना...'। एह बात से ऊ बहुते फिकिरमंद कि ब्याध के 'बीना मधुर-मधुर धुन बाजे/हिरना प्रान छोड़ के नाचे/कवने फेरे परलें ना/ना कुछ बूझें ना कुछ जाँचें/कवने फेरे परलें ना...'। कहाँ कब केकरा के ललकारे के आ कहाँ कब ओकरे के फटकारे के- ई काव्य-विवेक मोती बीए के ओह सबकुछ के समेट के चले के साध-ओर ले जाला, जवना के नाते आचार्य शुक्ल के प्रबंधकार कवि लोग तनी जादे पसंद परेले।

गीत-रचना में प्रबंध-कौशल के इस्तेमाल मोती बीए किहाँ अक्सर बा। गीत उठइहें त गीत में जवन कढ़इहें तवना में जवन-जवन पइहें तवन-तवन मिलइहें आ अँइसे कि ओह मिलावल के मिलावल मत कहे केहू, कहे त 'घोंटावल' कहे। विविध प्रसंगन से बहुबिध गुँथाइल गीत त बड़ले बाड़े स उनुका किहाँ, उनुका गितवन में अक्सर आपनो एगो आपसदारी बा, कवनो-ना-कवनो हितई-नतई से ऊ अपने में गुँथाइल बाड़े स। असहीं थोरे कि मृगतृष्णा बा त मृगछाला बा, मृगबीनो बा, मृग-कस्तूरियो बा। सेमर बा त अमड़ो बा, आ बाकायदा एह घोषणा के साथे कि 'ई त सेमरे के लेखा बाटे अमड़ा के पेड़'। 'महुआबारी में बहार' के सुख 'निझरि गइले अमवा' के दुख के तुक में बा, ताल-मेल में बा। ई ताल-मेल 'अँजोरिया' के साथे 'एगो दीया जरेला' में बा, 'परल पाला तुषार के' साथे 'सहलो ना जाई' में बा, 'आवऽ-आवऽ बैला' साथे 'खेतवा में हरवा' आ 'भदई दँवात बा' आ 'कटिया के सुतार' में बा। अइसन लागत बा कि ई जवन अलगे-अलगे सोगहग-सोगहग गीत बाड़े स, तवन मिल-जुल के बड़हन कवनो सोगहग एगो गाथा के लहावे में लागल बाड़े स। आ ईहो ना कि मोती बीए किहाँ एह लहवला के कवनो एक्के गो ढंग-ढर्रा होखे। केहू चाहे त उनुका दू गो अलग-अलग गीतन में से एगो 'एक ओर भदई दँवात बा/देखीं सभे/एक ओर पलिहर जोतात बा' के 'देखीं सभे' आ दुसरका गीत 'नाँवे ले हमरा अधार बा/सुनीं सभे/नाँवे ले हमरा अधार बा' के 'सुनीं सभे' के जुगल जोड़ी में ओह ढंग के एगो आउर, आ अइसनका कतने आउर-आउर रंग पा सकेला।

जवन पवले मोती बीए अपना कविताई से, आ मोती बीए के कविताई से जवन हमन के पवलीं ओह अनेक में से कुछेक में से एक, महज उदाहरण खातिर, ई कि 'जइसन अँजोरिया तहार हो भइया, ओइसन अँजोरिया हमार'। ई जवन समझ बा, जवन सुर बा,

जवन स्वर बा आ जवन समोधल बा कि 'जवने डहरिया तोहार हो भइया, तवने डहरिया हमार', कि 'जवने अछरिया तोहार हो भइया तवने अछरिया हमार', कि 'जवने मँजिलिया तोहार हो भइया, तवने मँजिलिया हमार', कि 'जवने ललसवा तोहार हो भइया, तवने ललसवा हमार', कि 'जवने सपनवा तोहार हो भइया, तवने सपनवा हमार'- ऊ अकसरुआपन आ अलहदगी के बेरामी के मारल एह मनुज बिरादरी खातिर उपकारी-उपचारी त बड़ले बा, एह समझ-सुर-स्वर-समोध से ओहू वाला जमीन के तइयारी के बल मिलत बा जवना प मोती जी के समकालीन एगो आउर कवि रमाकांत द्विवेदी रमता के ई प्रबल प्रिय पुकार गूँज रहल बा- 'काहे फरके-फरके बानीं रउरो आईं जी/हमार सुनीं कुछ आपनो सुनाईं जी.../जइसन फेर में बानीं हम ओहले रउरो नइखीं कम /कवनो निकले के जुगुती बताईं जी.../सभे आइल, रउरो आईं, सँगे रोईं सँगे गाईं/हम त रउरे हईं, रउरा हमार भाई जी...'। रचनाकारन के, चाहे ऊ इतिहास में होखस भा भूगोल में, अपना तरफ से लड़ाइए-भिड़ाइ के तउले-तजबीजे के आदती आलोचक लोग अगर एकरा से फुरसत पावस, आ ओ लोग से सँपरे त ईहो देखे, अगर देखे पावे, कि कइसे तमाम रचनाकारन के तमाम कुल्हि रचना, तमाम रचनाकारन के तमाम कुल्हि रचनन खातिर जगह बनावेले आ एक-दुसरा से जुड़-जुड़ा के आपन पूरापन के अवरू पुरावत, अवरू पूर्णावत रहेले।

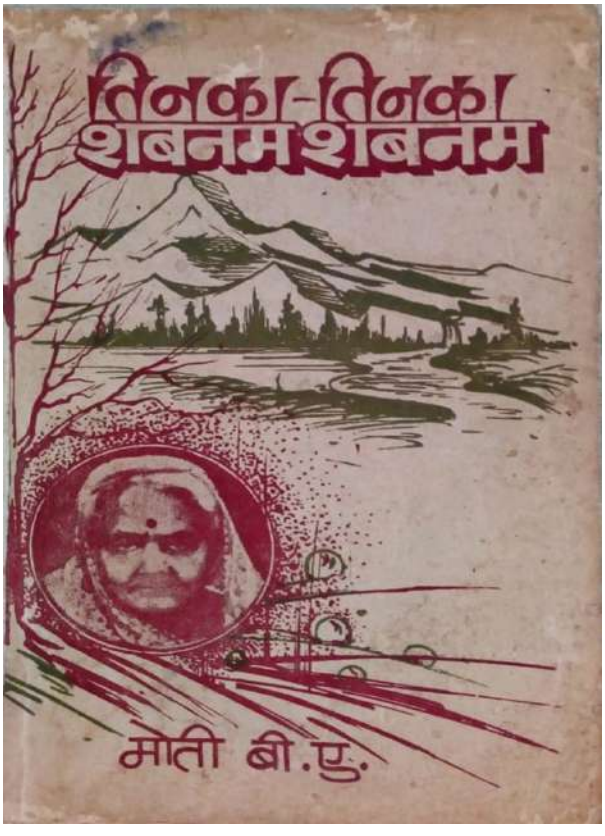

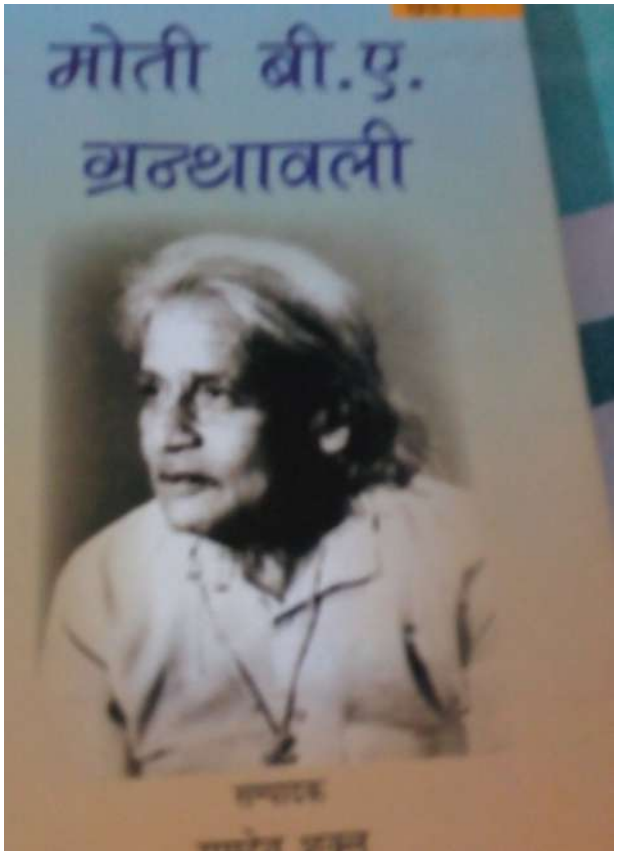

असहीं ओह अनेक में से कुछेक में से एक ईहो कि करोड़न खा के आ करोड़न खपाऽ के राष्ट्रमण्डल खेल जइसन भव्य-भड़कदार समारोह जवन भइल करेलन स कभी-कभार, ओइसन, भव्य त ना ओतना, बाकिर दिव्य ओकरा से बढ़ के, कुछ अउरियो समारोह एह देश में, साल-दुसाल में एक-दू बेर होइए जाइल करेला, भले कवनो कोना-अँतरा में, बाकिर बिना कुछ खइले-खियवले, बिना दलालन-ठिकेदारन के कवनो ठीका-ठिकाना देले-दियवले। जइसे महुआबारी में बहार के आवग के स्वागत-समारोह- 'असों आइल महुआबारी में बहार सजनी/कोंचवा मातल भुँइया छूए, महुआ रसे-रसे चूए/जब से बहे भिनुसारे के बेयार सजनी...'। ईहो ना कि एह आयोजन खातिर कवनो तइयारी ना करे परल, लागे-लगावे के ना परल, कुछ गँवावे के, कुछ गम खाय के ना परल- 'पहिले हरका पछुआ बहलि, झारि गिरवलस पतवा/गहना-बिखो छोरि के मुँड़ववलस सगरे मथवा/महुआ कुछू नाहीं कहले, जइसन परल ओइसन सहले...'। तब जाके बहल पुरवाई आ तब जाके 'महुआ अइसन ले रेंगरइले, जरी-पुलुई ले कोंचइले/लागल डाढ़ी-डाढ़ी डोलिया कहाँर सजनी..'। आ फेर एह साज-सँवार के बाद त इवेण्ट प इवेण्ट के जइसे लर लाग गइल- 'होत मुन्हारे डलिया-दउरी' लेके सखी-

सलेहर के निकलल, लइकन के सेल्हा लेके धउरल, 'कोंचवा के दुधवा से गोदना', 'महुआ के लपसी', 'महुअर', 'लाटा', 'कोइना', कोइना के 'पकना', ओकरा तेल से बेवाय के सेंकाई आ अन्हियारे से ओकर लड़ाई, आ ईहे ना, एह महुआ के 'केहू भेजि दिहल देसाउर, केहू घरे सरावे चाउर/लागल चढ़े-उतरे नसा आ खुमार सजनी... ई गरिबवन के किसमिस अनार सजनी...'। बाकिर मोती बीए के कवि-कर्म के अनेक परापत में से कुछेक में से एक ईहो कि एह महुआ-महोच्छव के आस्वाद ओकरे खातिर जे 'निझरि गइले अमवा' के बिखाद के सवदले होखे।

आ ओही कुछेक में से एगो ईहो कि मनई के पासे चिहाय खातिर पीसा के मीनार भा चीन के दीवार भा वाह ताज होखे चाहे मत होखे, अइसन सवाल जरूर होखे के चाहीं कि जवना हरिना के कबो रेत के पानीदार चमक से, कबो व्याधा के तीर से, कबो ओकरा बीन से, कबो अपने नाभि के कस्तूरी से चैन से ना रहे दियाइल, काहे आ कइसे, ओकरे छाल पूजा-पाठ के पबितरासन बना के बिछाऽ दियाइल! ओही कुछेक में से एगो ईहो कि ई दुनिया महज सुख आ दुख, हानि आ लाभ, जीवन आ मरन, पाप आ पुण्य जइसन एक-दूसरा से नितान्त पलट पदारथ के दुइए गो खाना में नइखे बँटाइल, सुख आ दुख के बीच में अउरियो बहुत कुछ बा, चित्त आ पट्ट के बीच में जाने कतने करवट बा। **'देखीं सभे' कि 'एक ओर केवड़ा लजात बा, एक ओर गेना फुलात बा, एक ओर सनई छिलात बा, एक ओर रूई धुनात बा, एक ओर तिलठी गँजात बा, एक ओर तोरी छिंटात बा, अरुई के पात पियरात बा, गोभी के पात चिकनात बा, हेन्ने से डोला फनात बा, होन्ने से आवत बरात बा, कजरी ना कत्तो सुनात बा, बिरहा आ आल्हा गवात बा, एक फूल जब ले गुहात बा, देखीं सभे, एक फूल तब ले लोढ़ात बा... '। के कही कि ई कुल्ह एक-दूसरा से एकदम से पलट-परतीति!**

असहीं अनेक में से कुछेक में से एक ईहो... बाकिर मुश्किल ई बा कि ओह अनेक में से कुछेक में से एकेक क के अनेक भा कुछेक के खपत के बावजूद, मोती बीए मतिन खुलहथ गीतकारन के ममिला में त खासे, ओह अनेक आ कुछेक के अनेक आ कुछेक बनले रहे के बा। एहू से कि मोती बीए के गीत खलिसा अनुभूति आ ओकरा उच्छलन से नइखे रचाइल, ऊ तनी एहू मन से तनाइल बा कि 'गितिया सुना दे तें बिचारि के'। त तय बा कि एके आलेख में कुल्हि फरियावे के हठ मत ठानल जाय।

त बेशक अचके में, बाकिर अबहीं बस अतने। जइसे-तइसे पुरवला से बढ़िया बा कि अधवे प छोड़ला आ अधवे प छुटला के अहसास बनल रहे, कि पुरावे के चिन्ता आ चाहत जियत रहे आ जियवले राखे।

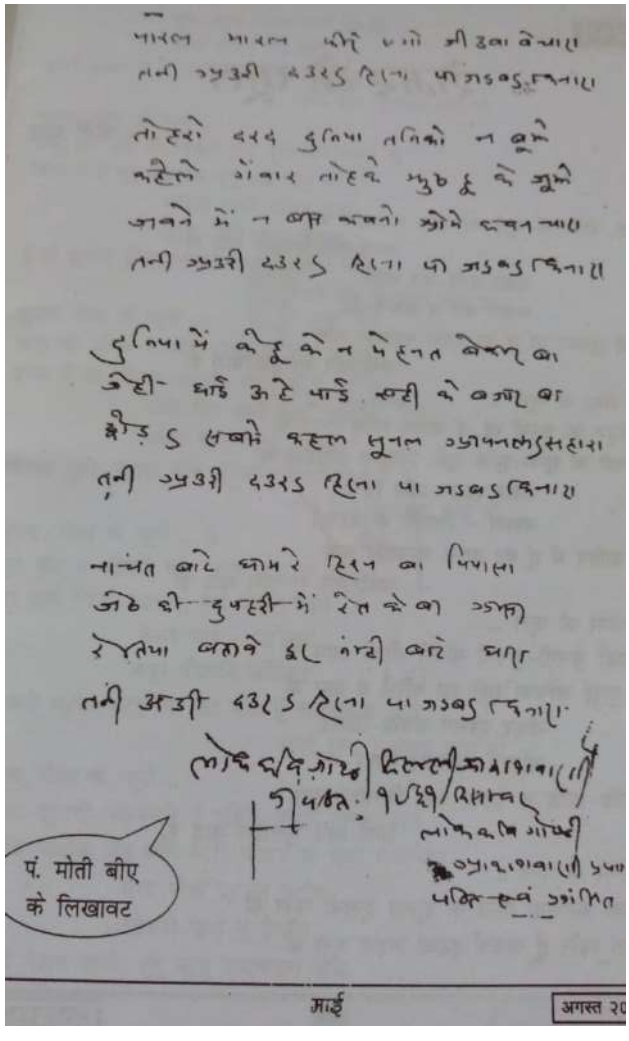

(हिंदी-भोजपुरी के कविताई-कथक्कड़ी-बतकही के सशक्त हस्ताक्षर प्रकाश उदय श्री बलदेव पीजी कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी में अध्यापन से जुड़ल बानी। 'बेटी मरे त मरे कुँआर' आ 'अरज-निहोरा' जइसन पुस्तकन से हलचल मचावे वाला प्रकाश उदय जी 'वाचिक कविता : भोजपुरी', 'भोजपुरी-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश', 'लोक और शास्त्र : अन्वय और समन्वय' आ कुछ अउरियो किताबन के संपादन में सहयोग कइले बानी आ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आ 'प्रसंग' पत्रिका के संपादन से संबद्ध बानी।)

मनोज भावुक

भोजपुरी सिनेमा के क्रिएटिव टीम (1961-2000)

फिलिम कइसन बनी, ई ओकरा क्रिएटिव टीम प निर्भर करेला। एह अंक में भोजपुरी सिनेमा के पहिलका अउर दुसरका दौर (1961-2000) के टीम ... निर्माता, निर्देशक, गीतकार, संगीतकार, पटकथा-लेखक आदि के जिक्र बा। अगिला अंक में आधुनिक भोजपुरी सिनेमा (2001-2020) के क्रिएटिव टीम पर विस्तार से बातचीत होई।

बिहार में फिल्मी दुनिया के शुरूआत करे के श्रेय औरंगाबाद के महाराजा भूपेंद्र नारायण सिंह के बा। उहां के 1931 ई0 में धीरेंद्र गांगुली के निर्देशन में 'पुनर्मिलन' नांव के एगो हिन्दी फिलिम के निर्माण कइलीं, जवना के बिहार के पहिला फिलिम के ऐतिहासिक श्रेय दिहल जाला। बाकिर बिहार में क्षेत्रीय फिलिमन के निर्माण के शुरूआत करे के श्रेय निश्चित रूप से आरा के रहनिहार विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी के बा। उहां के 1961 ई0 में 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' नांव के भोजपुरी फिलिम बना के भोजपुरी में फिलिम बनावे के रास्ता खोल दिहनी। एह फिलिम के बारे में फिल्मी इतिहासकार फिरोज रंगूनवाला अपना किताब Apictorial History of Indian Cinema में लिखले बाड़न, Directed by Kundan Kumar, the film was a typical romantic melodrama but the novelty of its language and folk music made it such a sensational hit that it let loose a flood of films in its sister dialects. 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो'

के बाद सन 2000 ले डेढ़-पौने दू सौ फिलिम बनली सन बाकिर एह में सफल फिलिमन के नांव अंगुरी पर गिनावल जा सकेला।

नीचे 1961 से लेके सन 2000 तक के भोजपुरी फिलिमन के नांव अल्फाबेटिकली दीहल गइल बा। हम ई दावा नइखी क सकत कि हमार दीहल सब जानकारी शत-प्रतिशत सही आ पूर्ण बा। हो सकेला हमरा से कुछ फिलिम के नांव छूट गइल होखे। इहो हो सकेला कि कवनो फिलिम रिलीज हो गइल होखे आ ओकरा आगे हम अधूरा लिख देले होखीं, बाकिर अइसन अनहोनी के पीछे इहे वजह हो सकेला कि नब्बे के दशक में जवन फिलिम बनल बाड़ी सन, उ कब शुरू भइली सन, कब पूरा भइली सन आ कब परदा पर से उतर गइली सन, कुछुओ पता ना चलत रहे। अखबार के कटिंग्स, पत्रिका अउर 1996 से 2000 के बीच दर्जनों निर्माता-निर्देशक आ कलाकार से बातचीत आ ओह लोग से मिलल फिलिम के बुकलेट आ पेपर कटिंग्स आदि ही एह आलेख के आधार बा। पटना में'धरती मइया' आ 'गंगा किनारे मोरा गांव'के निर्माता अशोक चंद जैन, पिया के गांव के निर्माता मुक्ति नारायण पाठक, ओह समय के बहुत महंगा फिलिम 'हो जाए द नैना चार' के निर्माता संजय राय, हक के लड़ाई, कजरी, बबुआ हमार के निर्देशक किरण कान्त वर्मा, माई के दुलार के निर्माता-अभिनेता दीप श्रेष्ठ, पत्रकार आलोक रंजन, गोदना के निर्माता विनय सिन्हा, महानायक अमिताभ बच्चन, भोजपुरी सुपर स्टार सुजीत कुमार, राकेश पाण्डेय, कुणाल सिंह, विजय खरे, श्री गोपाल, जयश्री टी, कुमकुम जी... पुरनका दौर के न जाने केतना स्टार-कलाकार से भेंट-मुलाकात आ बातचीत भइल जवना के ठीक से समेटे खातिर एगो अलगे किताब के जरुरत बा।

1961 से 2000 के बीच बनल फिलिमन के एगो सूची दे तानी। निहोरा बा कि अगर कवनो गलत नाम, गलत जानकारी छप गइल होखे त ओकर सूचना प्रमाणिक तथ्य का साथे हमरा के दीं, ताकि आगे सुधार कइल जा सके। ई सूची हम साल 2000 में तैयार कइले रहनी।

खण्ड (क)

1961 से 2000 तक के बीच बनल भोजपुरी फिलिमन के नांव

(1) आइल बसंत बहार(2)अंचरा के लाज(3)आंगन की लक्ष्मी(4)अंगना भइल विदेश,(5)आवत होइहे सांवरिया हमार, (6)कजरी(7)कब अइहें दुल्हा हमार(8)कसम गंगा जल के(9) कब होइहें गवना हमार(10) कृष्ण कन्हैया(11)कइसन बनवलऽ संसार(12)गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो(13)गंगा किनारे मोरा गांव(14) गंगा मइया भर द अंचरवा हमार (15) गंगा मइया भर द गोदिया हमार (16) गंगा आबाद रखिहऽ सजनवा के(17)गंगा जइसन भउजी हमार (18) गंगा मइया तोहार किरिया (19) गंगा मइया तोरी ममता महान (20) गंगा मइया कर द मिलनवा हमार (21) गंगा हमार माई (22) गंगा के बेटी (23)गंगा के गांव में (24) गंगा और गोरी (25) गंगा के तीरे-तीरे (26) गंगा से नाता बा हमार (27) गंगा कर इन्साफ(28) गंगा कहे पुकार के (29) गंगा तोहरे कारन (30) गंगा मिले सागर में(31) गंगा घाट (32) गंगा सरयू (33) गंगा ज्वाला (34) गंगा (35) गोरखनाथ बाबा तोहे खिचड़ी चढ़इबो (36) गजब भइले रामा (37) गौना (38) गोदना(39) गांव-देस (40) घर-गृहस्थी (41) घर-मंदिर (42) घायल पियवा (43) घर अंगना (44) चनवा के ताके चकोर (45) चुटकी भर सेनुर (46) चलऽ सखी दुल्हा देखे (47) चम्पा चमेली (48) चूड़ी सोहाग(49) छोटकी बहू (50) जेकरा चरनवा में लगले परनवा (51) जागल भाग हमार (52) जहां बहे गंगा के धार (53) जय भवानी (54) जय मां विन्ध्यवासिनी (55) जुग-जुग जीय मोरे लाल (56) जनम-जनम के साथ (57) झुमका (58) टिकुलिया चमके आधी रात (59) टिकुली के लाज (60) ठकुराइन

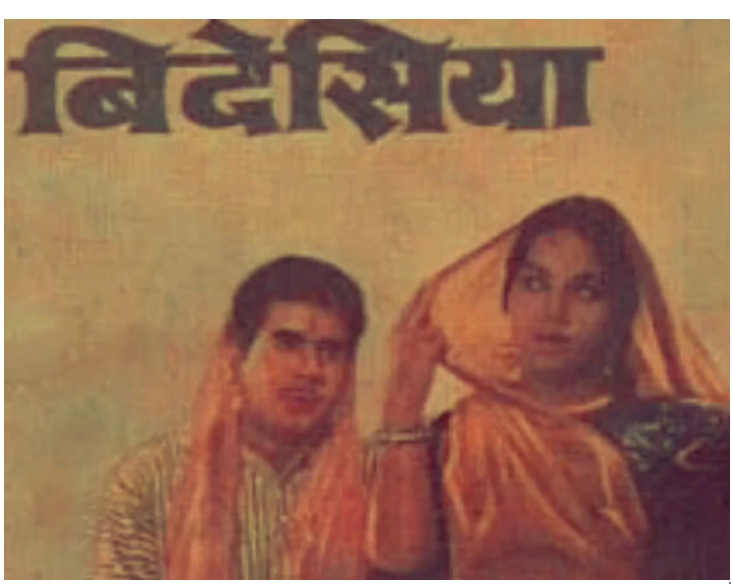

(61) तुलसी सोहे हमार अंगना (62) दंगल (63) दूल्हा गंगा पार के (64) दुलहिन (65) दगाबाज बलमा (66) दूल्हा (67) दिलवा पे केहू के जोर नाहीं (68) दुलहिन बनी मोर बहिनिया (69) दरद ना जाने कोय (70) देवर-भौजी (71) धरती मइया (72) धरती की आवाज (73) धनिया मुनिया (74) धन्नो (75) नाग पंचमी (76) नइहर छूटल जाय (77) नइहर की चुनरी (78) नौटंकी (79) नेहिया लगवनी सइयां से (80) पिया निरमोहिया (81) पटना के बाबू (82) पान खाये सैंया हमार (83) प्रीतम मोरे गंगा तीर (84) पिया के गांव (85) पैजनिया (86) परबतिया बनल पंडिताइन (87)पिया का घर प्यारा लगे (88) पिया बिना नाहीं चैन (89)पिया रखिह सेनुरवा के लाज (90) पिया के प्यारी (91) प्यारी दुलहिनिया (92) पिया टूटे ना पिरितिया हमार (93) पिरितिया के खेल (94) पतोहू बिटिया (95) पलकन के मेहमान (96) पिया बिना जिया जरे (97) प्यारा भैया (98) परदेसी सैंया (99) पिया पिरितिया जवान हो गइली (100) फुलवारी (101) फुलवा से भर द अंचरवा हमार (102) बलम परदेसिया (103) बिहारी बाबू (104) बहिना तहरे खातिर (105) बैरी सावन (106) बाजे शहनाई हमार अंगना (107) बलमा बड़ा नादान (108) बिदेसिया (109) विधना नाच नचावे (110) बलमा नादान (111) बिटिया भइल सेयान (112) बंसुरिया बाजे गंगा तीर (113) बबुआ हमार (114) बहुरिया (115) बिटिया चलल ससुराल (116) बिरहा के रात (117) बैरी कंगना (118) बाबा के दुलारी (119) बियाह (120)बड़की भौजी (121) बलमा सिपहिया (122) बैरी सजनाऽ(123) बेटी उधार के (124) विरहिन जनम-जनम के (125) बड़का भईया (126) बबुनी

(127) भींजल चुनरिया हमार (128) भौजी हमार माई (129) भैया-दूज (130) भौजी (131) भैया-भौजी के दुलार (132) भइले पिया गुलरी के फूल (133) भउजी दे द अचरवां क छांव (134) माई (135) माई के लाल (136) मितवा (137) मयभा महतारी (138)माई के अंचरा (139) महुआ (140) माई के दुलार (141)मोहे भूल गये सांवरिया (142) मुनिया (143) रूस गइले सैंया हमार (144)राम जइसन भईया हमार (145) रखिह लाज अंचरवा के (146)रंगली चुनरियारंग में तोहार (147) रानी बिटिया (148)रखिया बंधा ल भइया (149) लोहा सिंह (150)लागी नाहीं छूटे राम (151) लागल चुनरी में दाग (152) सोरहो सिंगार करे दुलहिनिया (153) सच भइले सपनवा हमार (154) सेनुरवा भइल मोहाल (155) सुहाग बिंदिया (156) सइयां मगन पहलवानी में (157) सोनवा के पिंजड़ा (158) सजाई द मांग हमार (159) सीता मइया (160) सेनुर (161) सम्पूर्ण तीर्थ यात्रा (162) सैंया बिना घर सूना (163) सांची पिरितिया हमार (164) सजनवा बैरी भइले हमार (165) सईंया से नेहा लगइबे (166) सईया से भइले मिलनवा (167) सोहाग के लाज (168) सैंया ले जा तू गवनवा (169) सैंया बेदर्दी (170) सबही नचावत राम गोसाई (171)सजना के अंगना में (172)सासु ननद (173)सांची परितिया के डोर (174) संघतिया (175) हमार संसार (176) हौसला (177) हमार भौजी (178) हमार दूल्हा (179) हमार बेटवा (180) हमार घर हमार संसार (181) हक के लड़ाई (182) हमरी दुलहिनिया (183) हमार वचन गंगा कसम (184) हमार परिवार (185) हो जाये द नैना चार (186) हे तुलसी मैया (187) हमार संसार

खण्ड (ख)

भोजपुरी फिलिमन के निर्देशक

निर्देशन के काम ओह आदमी के ह जे फिलिम विधा के हर पक्ष के यथोचित जानकारी आ गूढ़ प्रयोगिक अनुभव राखत होखे। बाकिर आज निर्देशक बनल सबसे आसान काम बा... खास कऽ के भोजपुरी फिलिम के निर्देशक बनल त आउरो। काहे कि जे एगो-दूगो हिन्दी फिलिम में केहू के असिस्ट कइलस त उ फेर अपना के जांचे खातिर भोजपुरी फिलिम के निर्देशन में लाग जाला। अधकचरा जानकारी के लेके एकाध फिलिम के निर्देशन करे के पीछे साइत मनसा इहे रहेला कि भोजपुरी हऽ, कुछुओ चल जाई।... आ नाहियो चली त जिनिगी भर निर्देशक त कहाइब, भले उनकर निर्देशित फिलिम कुड़ा-करकट काहे ना होखे। इहे वजह बा कि आज भोजपुरी में अच्छा फिलिम बहुत कम बा आ अक्सर भोजपुरी सिनेमा के बाजार उड़से-उड़से के कगार पर पहुंच जाला।

बहरहाल हम इहां भोजपुरी फिलिम के कुछ चर्चित आ सफल निर्देशक के चरचा कर रहल बानी। भोजपुरी फिलिम के पहिला निर्देशक कुंदन कुमार, जे बनारस (उ.प.) के रहे वाला रहले, के नांव आदर का साथे लेबे के होई काहे कि 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' के अपार सफलता के पीछे उनकर दक्ष निर्देशकीय दृष्टिकोण के बहुत बड़हन हाथ रहे। बाद में उ 'लागी नाही छूटे राम', आ 'भौजी' के भी निर्देशन कइले। उत्तर प्रदेश भोजपुरी के बहुते सफल निर्देशक देले बा, जवना में कुंदन कुमार का अलावे नाजिर हुसैन, एस. एन. त्रिपाठी, गोविंद मूनिस, राजकुमार शर्मा, प्रेम सिंह आ राजपति आदि लोग प्रमुख बा। 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' के स्क्रिप्ट राइटर आ हिन्दी फिलिम के मशहूर चरित्र अभिनेता नाजिर हुसैन द्वारा निर्देशित फिलिम 'बलम परदेसिया' देखला के बाद उनका के सफल निर्देशक ना कहे के दुस्साहस के करी? बाद में उहां के कमसार फिलिमस के बैनर तले 'रूस गइलें सइयां हमार' के निर्देशन भी कइलीं।

पहिला दौर के अउर सफल निर्देशक में सर्वश्री एस. एन. त्रिपाठी (बिदेसिया),'नदिया के पार' के निर्देशक गोविन्द मुनिस (मितवा), कमर नार्वी (धरती मइया, भईया दूज), दिलीप बोस (गंगा किनारे मोरा गांव, पिया के गांव, छोटकी बहू, सजनवा बैरी भइले हमार, बिहारी बाबू), राजकुमार शर्मा (माई, दुल्हा गंगा पार के, हो जाये द नैना चार), प्रेम सिंह (पिया निरमोहिया, पिया के प्यारी, भइले पिया गुलरी के फूल), राजपति राही (दंगल, पलकन के मेहमान), कल्पतरू (हमार भौजी) आ देवेंद्र (आइल बसंत बहार, नइहर छूटल जाय) आदि प्रमुख बाड़न।

भोजपुरी फिलिम के पहिला आ एकमात्र महिला निर्देशिका आरती भट्टाचार्या बाड़ी, जे भोजपुरी सिनेमा के अपना दौर के सुपर स्टार कुणाल के धर्मपत्नी हई। आरती जी 'दगाबाज बलमा' आ 'हमार घर हमार संसार' के निर्देशन कइले बाड़ी।

भोजपुरी के जानल-मानल अभिनेता राकेश पाण्डेय (बंसुरिया बाजे गंगा तीर, तुलसी सोहे हमार अंगना), सुजीत कुमार (पान खाये सैंया हमार) आ श्रीगोपाल (गंगा कहे पुकार के, हमरी दुलहिनिया) भी कई गो फिलिम के निर्देशन कइले बा लोग।

अन्य प्रमुख निर्देशकन में सर्वश्री अकबर बालम (बलमा नादान), आदर्श जैन (राम जइसन भइया हमार), किरण कांत वर्मा (हक के लड़ाई, बबुआ हमार, कजरी) के. विनोद (पिया रखिहऽ सेनुरवा के लाज), छोटू पुरनियावाला (हमार दूल्हा), जावेद रहमान (बाजे शहनाई हमार अंगना), जे.पी. श्रीवास्ताव (जुग-जुग जीयऽ मोरे लाल), तेजेश अखौरी (आंगन की लक्ष्मी), हंसमुख राजपुत (नइहर के चुनरी), लालजी यादव (सोनवा के पिजड़ा, बिरहा के रात), रामनाथ राय (परबतिया बनल पंडिताइन), रति कुमार (दंगल), मीनी ठाकुर (चम्पा चमेली), पं. राधाकान्त (विरहिन जनम-जनम), अश्विनी कुमार (गंगा-ज्वाला), पं. रामनाथ शुक्ला (सेनुर) राजीव रंजन (गंगा आबाद रहिहऽ सजनवा के), राजू सिंह (चल सखि दुल्हा देखे), सुरेन्द्र चैबे (गोरखनाथ बाबा तोहे खिचड़ी चढ़इबो), प्रमोद कुमार सिंह (सांची पिरितिया हमार), नीहाल सिंह (बैरी सजना, बैरी कंगना), आ नवीन जोशी (कब अइहे दुल्हा हमार),आकाश योगी (महुआ), श्रीमान मिश्र (बियाह), जुल्फीकार अली (दिलवा प केहू के जोर नाही) आ प्रमोद भारद्वाज (दुलहिन बनी मोर बहनिया) आदि के नांव लिहल जा सकेला।

खण्ड (ग)

भोजपुरी फिलिमन के निर्माता

भोजपुरी सिनेमा के पहिला निर्माता विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी के भोजपुरी सिनेमा के इतिहास कबो ना भुला सकी काहे कि उहां के ओह समय में भोजपुरी फिलिम में धन लगावे खातिर सहर्ष तइयार हो गइनी, जबकि लोग भोजपुरी के नाम पर नाक-भौं सिकोड़त रहे।

'दंगल' आ 'बिदेसिया' के निर्माता बच्चू भाई शाह गुजराती होके आ 'मितवा' के निर्माता जगमोहन मट्ठू कश्मीरी होके भोजपुरी खातिर जवन योगदान कइलस लोग ओकरा खातिर भोजपुरिया समाज एह लोग के ऋणी रही।

भोजपुरी के मशहूर निर्माता में प्रमुख बाड़न-सर्वश्री रामायण तिवारी (लागी नाहीं छूटे राम), लालजी गुप्त (आंगन की लक्ष्मी, गंगा मइया भर द अंचरवा हमार, नइहर के चुनरी), विनय सिन्हा (गोदना), मोहन जी प्रसाद (हमार भौजी), अशोक चंद जैन (गंगा किनारे मोरा गांव, धरती मइया, दुलहिन), मुक्ति नारायण पाठक (पिया के गांव, पिया के प्यारी) आ संजय राय (छोटकी बहू, हो जाये द नयना चार) आदि।

हिन्दी सिनेमा के विख्यात अभिनेता आ बिहारी बाबू के रूप में लोकप्रिय शत्रुघ्न सिन्हा भी मात्र एगो भोजपुरी फिलिम 'बिहारी

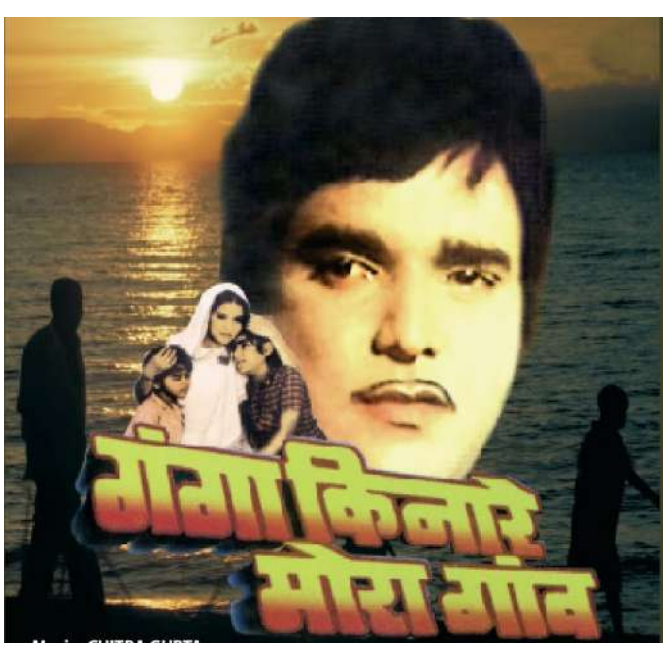

बाबू' के निर्माण क के अपना कर्तव्य के इतिश्री कऽ लेलन। साइत उनकर प्रयास आगे भी जारी रहित त भोजपुरी सिनेमा के दशा आ दिशा में निःसंदेह सुधार होइत।

भोजपुरी सिनेमा के सुपरस्टार कुणाल (हमार दूल्हा, हमार घर हमार संसार), सुजीत कुमार (पान खाय सइयांहमार), आ मशहूर संगीतकार-गीतकार लक्ष्मण शाहाबादी (दुल्हा गंगा पार के) भी भोजपुरी फिलिम के निर्माण कइले बाड़न।

भोजपुरी सिनेमा के अन्य निर्माता में प्रमुख बाड़न-सर्वश्री सचिदानंद यादव (माई), हरिनारायण सिंह (सोनवा के पिंजड़ा), एस.एस. नईम (पलकन के मेहमान), जगदीश सिंह (पिया रखिह सेनुरवा के लाज), शीतला प्रसाद अग्रहरी (परबतिया बनल पंडिताइन), एल. एन. पोद्दार (कजरी), सीताराम (लागल चुनरी में दाग), संजय कुमार जयसवाल (बैरी सजना, बैरी कंगना), संजय सिंह ठाकुर (भइले पिया गुलरी के फूल), सतश्री बिहारी (दुलहिन बनी मोर बहिनिया), दिलीप भउर (बिटिया चलल ससुराल), दीप श्रेष्ठ (माई के दुलार), राणा अनिल सिंह (महुआ) आ श्रीमान मिश्रा (बियाह) आदि।

खण्ड (घ)

भोजपुरी फिलिमन के संगीतकार

भोजपुरी फिलिमन के पहिला संगीतकार चित्रगुप्त जी रहनी। उहां के 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' फिलिम में संगीत निर्देशन कइनी जेकर एक-एक गाना अब तक लोग के ईयाद बा। जइसे कि टाइटल ट्रैक 'हे गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो', 'सइयां से कर द मिलनवा', 'काहे बंसुरिया बजवलऽ', 'सोनवा के पिंजरा में बन्द भइल हाय राम चिरई के जियरा उदास' गीत लता आ रफी के आवाज में केतना मर्मस्पर्शी बा। शैलेन्द्र जी के लिखल गीतन के चित्रगुप्त जी के संगीत अइसन निखरलस कि भोजपुरी सिनेमा के धमक दूर-दूर ले पहुंचल। भोजपुरी सिनेमा में चित्रगुप्त जी के संगीत के एकछत्र राज्य भइल। उहां के सफल फिलिमन आ गीतन के लाइन लगा देहनीं। जइसे कि बलम परदेसिया, हमरी दुलहिनिया, सैंया ले जा तू गवनवा, भैया दूज, बिहारी बाबू, गंगा किनारे मोरा गांव, पिया के गांव, धरती मइया, दुलहिन, गंगा कहे पुकार के, विरहिन जनम-जनम के, हमार भौजी, गोदना, पान खाए सइयां हमार, सेनुर आदि।

चित्रगुप्त जी का बाद भोजपुरी के फिल्मी दुनिया में सफल संगीतकार के रूप में पहिला नांव बिदेसिया के निर्देशक आ संगीत निर्देशक श्री एस. एन. त्रिपाठी जी के लेबे के होई। बलमा नादान, बंसुरिया बाजे गंगा तीर आ सुहाग बिंदिया के संगीतकार श्री श्याम सागर जी के दूसरा चित्रगुप्त कहल जाला।

गौरतलब आ बड़ी मजा के बात त ई बा कि हिन्दी सिनेमा के लोकप्रिय आ मशहूर संगीतकार नदीम-श्रवण के पहिला फिलिम 'दंगल' रहे अर्थात एह लोग के फिल्मी करियर के शुरूआत आ पहचान भोजपुरी फिलिम 'दंगल' में सफल संगीत दिहला से भइल।

पेशा से इंजीनियर आ शौक से संगीतकार श्री लक्ष्मण शाहाबादी के भला केऽ भुला सकेला। इहां के दीहल गीत आ संगीत ना खाली भोजपुरिया लोग अपितु दोसरा भाषा के भोजपुरी प्रेमी लोग भी अक्सर गुनगुनात रहेला। इहां के 'दूल्हा गंगा पार के', 'राम जइसन भइया हमार', 'हमार दूल्हा', 'बेटी उधार के', 'गंगा-ज्वाला', 'छोटकी बहू', 'गंगा आबाद रखिहऽ सजनवा के' आ 'दगाबाज बलमा' आदि फिलिमन में सफल संगीत देले बानी।

हिन्दी सिनेमा के वरिष्ठ संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन भी भोजपुरी फिलिम (फुलवारी, गंगा मइया तोरी ममता महान) में संगीत देले बानी।

अन्य सफल संगीतकार में सर्वश्री सुरेन्द्र कोहली (चल सखी दुल्हा देखे, पलकन कऽ मेहमान, कब अइहें दुल्हा हमार), सी. रामचन्द्र (मितवा), हुसैन (बाजे शहनाई हमार अंगना), दिलीप दत्ता (बबुआ हमार, पैजनिया), उत्तम सिंह (माई, जुग-जुग जीअ मोरे लाल, भइले पिया गुलरी के फूल), उत्तम-जगदीश (हो जाये दऽ नयना चार), चन्दर-रफीक (आंगन की लक्ष्मी), अजय स्वामी (घर-अंगना) आदि प्रमुख बाड़न।

संगीतकार अरूण बैजनाथ (हक के लड़ाई), आर. के. खन्ना (महुआ), उषा खन्ना (पिया रखिअ सेनुरवा के लाज), जयदेव (नइहर छूटल जाय), प्रतिमा दत्ता (परबतिया बनल पंडिताइन),

विजय श्रीवास्तव (विवाह), सपन जगमोहन (कजरी), एस बाबरे (दुलहिन बनी मोर बहनिया) आ ऋषि राज (दिलवा पे केहू के जोर नाही) के प्रयास भी सराहनीय बा।

खण्ड (ड़)

भोजपुरी फिलिमन के गीतकार

हिन्दी सिनेमा के चर्चित गीतकार शैलेन्द्र जी भोजपुरी के पहिला सिनेमा 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' में कई गो अमर गीत देके भोजपुरी सिनेमा के प्रथम गीतकार के रूप में अमर हो गइल बानी। बाद में उहां के 'मितवा' आ 'नइहर छूटल जाय' में भी गीत लिखले बानी। शैलेन्द्र जी के बाद चर्चित आ सफल गीतकार में प्रमुख बानी सर्वश्री राममूर्ति चतुर्वेदी (बिदेसिया), मजरूह सुल्तानपुरी (लागी नाही छूटे राम), रामेश्वर सिंह काश्यप (कब होइहें गवनवा हमार), रमेश पाण्डेय (जेकरा चरनवामें लगले परनवा), मधुकर बिहारी (सोरहो सिंगार करे दुलहिनिया), कमलेश (नाग पंचमी), अंजान (बलम परदेशिया, हमार भौजी, बिरहिन जनम-जनम के), भोलानाथ गहमरी (बैरी कंगना), डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयी' (पिया के गांव), प्रो. उमाकान्त वर्मा (पिया के प्यारी), लक्ष्मण शाहाबादी (गंगा किनारे मोरा गांव, धरती मइया, दगाबाज बलमा

आदि), सत्यनारायण (बाजे शहनाई हमार अंगना), समीर (गंगा कहे पुकार के), डॉ. प्रभुनाथ सिंह (बलमा नादान), कैफी आजमी (बलमा बड़ा नादान), कुलवंत जानी (दंगल), एस. भाष्कर (दंगल) आ श्रीराम आजमी (आंगन की लक्ष्मी) आदि।

अन्य सफल गीतकारन में सर्वश्री श्रीरामनाथ राय (परबतिया बनल पंडिताइन), राजपति (पलकन के मेहमान), विजय श्रीवास्तव (बियाह), शिरिशराज (भइले पिया गुलरी के फूल) डॉ. शान्ति जैन (हक के लड़ाई), अशोक घायल (चल सखी दुल्हा देखे), अरविन्द कृष्ण (पिया रखिह सेनुरवा के लाज) आ वीरेन्द्र पाण्डेय (कब अइहे दूल्हा हमार), कुमार विरल आ वैदेही शरण वनियापुरी, बी. बी. मौजी (आंगन की लक्ष्मी), ब्रजकिशोर दुबे (माई, महुआ, बिहारी बाबू, हो जाये द नयना चार, जुग-जुग जीअ मोरे लाल), विशुद्धानंद (कजरी, सुहाग बिंदिया, पिया निरमोहिया, पैजनिया, हमार सजना, दुल्हा, पतोहू बिटिया) आ सतीश मुन्ना (घर-अंगना, कब अइहें दूल्हा हमार) आदि प्रमुख बाड़न।

नोटः-फिल्मी गीतन के माध्यम से भी साहित्य सेवा करे खातिर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूगो अध्यक्ष श्री मोती बी.ए. आ श्री भोलानाथ गहमरी के सादर ईयाद कइल जाई। ...'भोजपुरी सिनेमा के विकास यात्रा' में हम चरचा कर चुकल बानी कि फिल्मी दुनिया में भोजपुरी के विजय प्रवेश भोजपुरी गीतन के माध्यम से ही भइल आ एकर श्रेय गीतकार श्री मोती बी.ए.जी के बा। ई ठीक बा कि उ फिलिम के संवाद साहू साहेब खुदे लिखले छतीसगढ़ी में आ एकर गीत (आठ गो गीत) मोती बी.ए.जी लिखली भोजपुरी में।

'कवने खोंतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई' के गीतकार गीत-पुरुष भोलानाथ गहमरी जी आकाशवाणी, दूरदर्शन, एलबम आ फिलिम जइसन व्यवसायिक विधा में भी साहित्यिक, अर्थपूर्ण आ लोकधुन पर आधारित गीत देबे खातिर सदैव प्रतिबद्ध रहल बानी। फिल्मी गीतकार के रूप में इहे इहां के भोजपुरी जगत में सदैव ईयाद राखल जाइब।

खण्ड (च)

भोजपुरी फिलिमन के लेखक

(कथा, पटकथा, संवाद)

भोजपुरी सिनेमा के पहिला लेखक नाजिर हुसैन जी बानी। बाद के प्रमुख लेखकन में सर्वश्री राममूर्ति चतुवेर्दी (बिदेसिया), मुशा कालिम (बलमा बड़ा नादान), रामेश्वर सिंह काश्यप (लोहा सिंह), रमेश पाण्डेय (नाग पंचमी, सीता मइया), मधुकर बिहारी (सोरहो सिंगार करे दुलहिनिया), प्यारे लाल संतोषी (कब होइहें गवनवा हमार) आ विश्वनाथ पाण्डेय आदि के नांव लिहल जाई।

दूसरा दौर के प्रमुख लेखकन में लक्ष्मण शाहाबादी (गंगा किनारे मोरा गांव, छोटकी बहू, धरती मइया), बी.बी. मौजी (आंगन की लक्ष्मी), नारायण भंडारी (दगाबाज बलमा), मधुकर सिंह (दुल्हा गंगा पार के) प्रेम बैरागी (घर-अंगना), चन्द्रभूषण मणि (बेटी उधार के) आलोक रंजन (हक के लड़ाई), राजपति (पलकन के मेहमान), गिरिश रंजन (गंगा आबाद राखिह सजनवा के), शिव मंजुल (माई), जीतेन्द्र सुमन (महुआ, कब अइहें दुल्हा हमार), डॉ. गुरूदीप (हमार भौजी) आ विशुद्धानंद (कजरी, बैरी सावन, पैजरिया, पिया निरमोहिया) आदि प्रमुख बाड़न।

खण्ड (छ)

भोजपुरी फिलिमन के गायक-गायिका

गायक आ कलाकार कवनो भाषा के गुलाम ना होला। एह से कवनो दोसरो भाषा के गीत गा सकेला। भोजपुरी सिनेमा के गायक-गायिक में कुछ लोक गायक के छोड़ के बाकी उहे लोग शामिल बा, जेकर हिन्दी सिनेमा में भी बोल-बाला बा।

'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो', के गीतन के अमर होखे के पीछे इहो राज बा कि उ गीत मोहम्मद रफी आ लता मंगेशकर के आवाज में गावल गइल रहे। 'गंगा मइया.....' के बाद रफी साहेब 'बलम परदेसिया', 'दंगल', 'रूस गइले सइयां हमार' आ 'धरती मइया' आदि कई गो फिलिम के गीत के आपन अनोखा स्वर देके हिट कइले बानी।

रफी साहेब के बाद पुरनका गायक में मन्ना डे (बिदेसिया, दंगल आदि) आ महेन्द्र कपूर (गंगा किनारे मोरा गांव, बिदेसिया, दूल्हा गंगा पार के, माई आदि) के नाम आदर का संगे लेबे के होई।

बाद के दौर में भोजपुरी फिलिम में सबसे अधिका गीत गावे वाला गायक में सुरेश वाडेकर (धरती मइया, गंगा किनारे मोरा गांव, पिया के गांव, दूल्हा गंगा पारके, दगाबाज बलमा, माई, हमार भौजी, जुग-जुग जीअ मोरे लाल, छोटकी बहू, गंगा कहे पुकार के, पलकन क मेहमान, बेटी उधार के, हो जाये द नयना चार, पिया के प्यारी, हक के लड़ाई, गंगा-ज्वाला, हमरी दुलहिनिया, भइले पिया गुलरी के फूल आदि) आ उदित नारायण (गंगा किनारे मोरा गांव, चल सखी दूल्हा देखे, पलकन कऽ मेहमान, हो जाये दऽ नयना चार, महुआ, हमार भौजी आदि) प्रमुख बानी।

किशोर कुमार भी कुछ भोजपुरी फिलिम में गीत गवले बानी। 'धरती मइया' में उहां के गावल गीत 'जाने कइसन जादू कइलू, मंतर दिहलू मार ..... हम त हो गइलीं तोहार.... ए सांवर गोरिया' बड़ा लोकप्रिय भइल रहे।

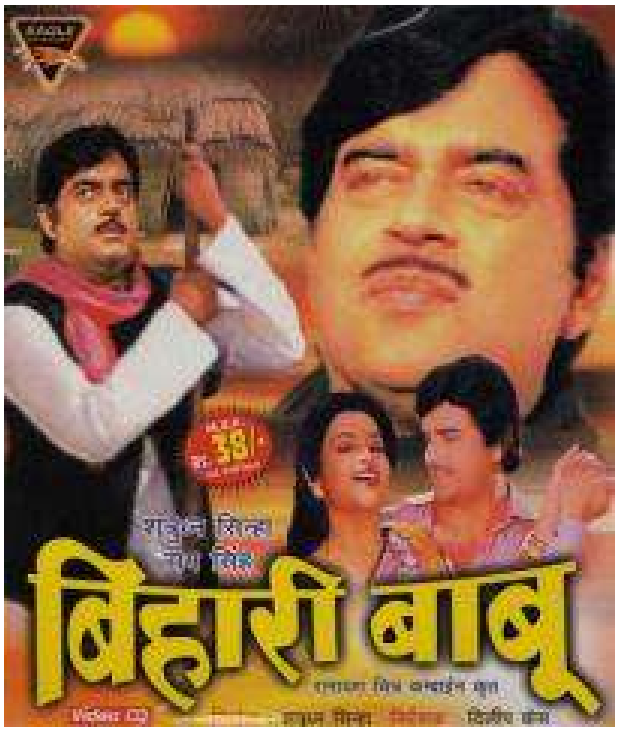

अन्य प्रमुख गायकन में शब्बीर कुमार (पिया के गांव, दुलहिन, हक के लड़ाई, हमरी दुलहिनिया, गंगा आबाद रखिह सजनवा के), विपिन सचदेवा (चल सखी दूल्हा देखे), यशपाल सिंह (बियाह, कजरी), मो. अजीज (घर-अंगना, पलकन कऽ मेहमान, पिया के प्यारी, कजरी, बियाह), पंकज उधास (गंगा-ज्वाला, हो जाये दऽ नयना चार) आ नितिन मुकेश (हक के लड़ाई) आदि लोग प्रमुख बा।

लोक गायक में बालेश्वर यादव (गंगा कहे पुकार के) आ अजीत कुमार अकेला (हक के लड़ाई) भी कुछ गीत गवले बा लोग। गायिका लोग में लता जी के बाद उनकर बहिन उषा मंगेशकर आ आशा भोंसले भोजपुरी के सबसे जादे फिलिम में गीत गवले बा लोग। बाद के दौर में ढेर गीत गावे वाली गायिका लोग में प्रमुख बाड़ी- अनुराधा पौडवाल, अलका याज्ञनिक, दिलराज कौर, कविता कृष्णमूर्ति, चन्द्राणी मुखर्जी, साधना सरगम आ अनुपमा देशपाण्डे। अन्य प्रमुख गायिका लोग में बिहार कोकिला शारदा सिन्हा, पूर्णिमा, नीलिमा निलय, पद्मिनी, आशा राठौड़, मृदुला आ शुभा जोशी आदि प्रमुख बाड़ी।

चलनी हंसे सूप पर जवना में सतहत्तर गो छेद

लेखक के नाम ओम प्रकाश अश्क। माटी के मोह अइसन कि तीन दशक से एह ठाँव-ओह ठाँव बिचरला के बादो बोली-बतकही ठेठ भोजपुरी। आसाम, बंगाल, झारखण्ड आ बिहार में प्रभात खबर आ हिन्दुस्तान जइसन बड़ अखबारन के संपादक रहला के बादो रहन-सुभाव ठेठ गंवई। तीस बरिस से अखबारन में बेनामी स्तम्भ-मलिकाइन के पाती के लेखन। हमरा आग्रह पर पहिला बार नाम के साथे मलिकाइन के पाती के सिलसिला शुरू भइल बा। एह अंक में पढ़ीं-चलनी हंसे सूप पर जवना में सतहत्तर गो छेद - संपादक

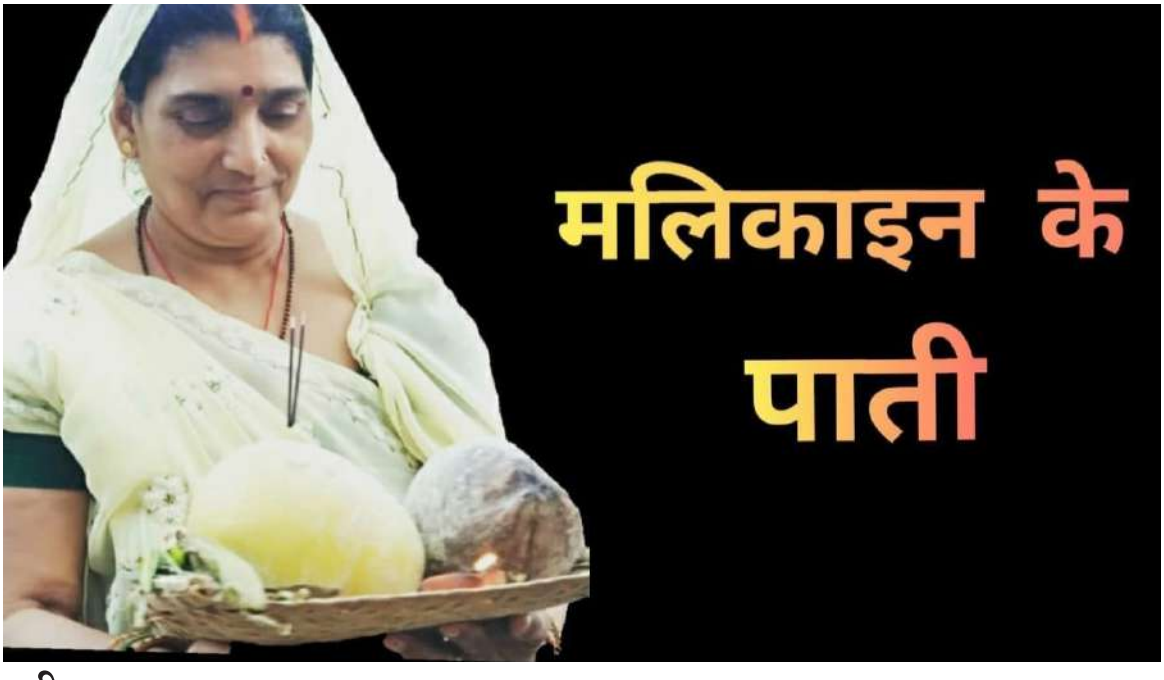

चलनी हंसे सूप पर जवना में सतहत्तर गो छेद। मलिकाइन के पाती आइल बा। हर बेर नियर अबकियो उनकर पाती कहाउते से शुरू भइल बा। बिहार में वोट के टाइम बा। सब केहू आपन-आपन गोटी सेट करे में लागल बा। जब वोट आवेला, नेता लोग के चाल-ढाल आ बोली-बतकही बदल जाला। साल भर लुकाइल-भुलाइल नेता लोग भादो के बेंग के नियर लउके लागेला। बेंगवन नियर ओह लोगन के बोली भी टर्र-टांय निकले लागेला। मलिकाइन ई कुल पर दीठ गड़ा के रहेली। अबकी उनका पाती में एही कुल के चर्चा बा। मलिकाइन लिखले बाड़ीः

पांव लागीं मलिकार! काली माई के किरपा, बरम बाबा के नेह आ पीर साईं के छोह से कोरना के कवनो असर अपना गांव-जवार पर अब ले नइखे परल। सभे नीक-निरोग बा। हम त जबसे सुननी कि मुंह-नाक ढाक के बाहर निकलला पर खतरा नइखे, ओही बेरा तीन गो कपड़ा के जाब (मलिकाइन मास्क के नाम कपड़ा के जाब रखले बाड़ी) पांड़े बाबा के नतिया से कीनवा के मंगा लिहनी। बड़का-छोटका दूनू के भरसक घरहीं में राखे के कोशिश करीले, बाकिर केतनो त लड़िका हउवन सन नू मलिकार। ओकनी के खेले-कूदे के मनवा त करबे करेला। जब

ढर अगुता देले सन त ओकनी के मुंह जाब के दुआर पर खेले के कह दीले। हमहूं दोगहा में जब आऊ ले त मुंह जाब लीले। सुने में आइल रहे मलिकार कि हवा में कोरना घूमत बा। एही से एतना तितिम्मा करे के परत बा। का जाने कहिया ले ई ओराई।

पांड़े बाबा भोरे-भोरे जब खबर कागज पढ़ी ले त रोजे बताई ले कि बिहार में केतना कोरना के मरीज मिलले, केतना लोग कोरना से मूअल, देस-दुनिया में कोरना के का हाल बा। ई सब सुन-सुन के मन डेरा जाला मलिकार। पांड़े बाबा काल्ह कहत रहवीं कि बिहार में अवरेज (एवरेज के मलिकाइन अवरेज लिखले बाड़ी) तीन हजार मरीज रोज मिलत बाड़े। अबही ले साढ़े चार सौ लोग कोरना से बिहार में मूअल बा।

एकरे संगे पांड़े बाबा एगो अउरी बात बतावत रहुवीं कि बिहार में बाढ़ आइल बा। आपन जवार उंचास पर बा, एह से बाढ़ त हमरा देखे के नइखे मिलल, बाकिर खवाजेपुर वाली फुआ के बड़की बेटिया बतावे ले कि हर साल घर बदले के परेला। गडक जी के कटाव अइसन होला कि कबो एइजा त कबो ओइजा, जगहा बदल-बदल के घर बनावे के परेला। टोला-टापर बदलत रहेला। अब त ऊ लोग एही से गोपालगंज में घर बना के रहत बा। सतमिया के थावे मंदिर में कराही चढ़ावे हम गइल रहनी त ऊ भेंटा गइल। ऊ बतावे लागल कि ए बहिना, बाढ़ आइल बा। पुरनका घर में पानी एतना समा गइल रहल हा कि घरे भहरा के गिर गइल। लोग के एतना तबाही बा कि केहू चिउरा फांक के दिन काटत बा त केहू बान्ह पर माल-गोरू लेके डेरा डलले बा। जेतना तबाही आदमी के खाये-पीये के बा, ओतने माल-गोरू के।

एही में पांड़े बाबा एगो अउरी बात कहत रहुवीं कि वोटवा बुझाता होइए के रही। भलहीं लोग बाढ़ आ कोरना से तबाह बा, बाकिर नेतवन के वोटवे के फिकिर लागल बा। मार रोज अफसर लोग के बदली होता। नेतवा एने से ओने आ ओने से एने आवाजाही शुरू क दिहले बाड़े सन। सात पुस्त के गाड़ल बतकही खोद-खोद के निकालत बाड़े सन। ई उनकर शिकायत त ऊ इनकर शिकायत करे में जेतना जोर जांगर में बा, सब लगा दिहले बाड़े सन।

एही में एगो बात पांड़े बाबा कवनो राम विलास पासवान आ उनकर बेटा के बतावत रहुवीं। कहत रहुवीं कि एतना दिन से नीतीश कुमार के संगे रह के ओह लोगन के कवनो कमी नीतीश में ना लउकल। बाकिर वोटवा नियराते ऊ लोग अइसन बोलत बा, बुझाता कि नीतीश से कबो कवनो लगाई-छुआई नइखे रहल। खोज-खोज के नीतीश के कमी कमजोरी बतावत-गिनावत बा लोग। ई त रउरो मानेब मलिकार कि केहू अइसन नइखे, जेकरा में कवनो कमी ना होखे। रउरो-हमरा में कई गो कमी निकल जाई। बाकिर ई देखे के चाहीं कि केकरा में कम बा आ केकरा में ढेर बा।

पांड़े बाबा बतावत रहुवीं कि राम विलास पासवान त खाली अपने घर-परिवार खातिर अबले सोचले। उनका जब बुझाइल कि फलनवां भारी पड़त बाड़े त उनकरा ओरी सट गइले। पांड़े बाबा उनकरा के घाघ कहत रहुवीं। घाघ उहे नू रहले मलिकार जे बता देस कि कब बरखा होई आ कब सुखाड़। ऊ त इहो भांप लेस कि पुरुवा कब बही आ कब पछुआ। एही से पांड़े बाबा उनका के आज के जमाना के घाघ कहत रहुवीं। हम त ई कुल सुनीले, इयाद ना राखीं, बाकिर पांड़े बाबा के कहलका इयाद परत बा। उहां के कहत रहुवीं कि चलनी हंसे सूप पर जवना में सतहत्तर गो छेद! राम विलास त अबहीं ले खाली अपने घर-परिवार के बढ़वले बाड़े। अपने मंतरी बाड़े। उनका पाटी में अपने, बेटा, भतीजा, भाई एमएलए-एमपी बा लोग। एह घरी ऊ नीतीश के पीछे हाथ धो के परल बाड़े।

जाये दीं मलिकार, एह कुल से हमनी के का लेबे-देबे के बा। हमरा माई के मौसी कवनो गोसाईं जी के एगो बात कहस- कोउ नृप होई हमें का हानी, चेरि छाड़ि ना होखब रानी। हमनी के त चार गो चोर-बेईमान भा झूठ लबार में कवनो कम बुझाव त ओकरा के खाली एगो वोट दे आवे के बा। अब न गान्ही बाबा के सुराज बा आ ना राजिंदर बाबू के राज। शास्त्री जी अइसन लोग ओरा गइल। साइकिल पर चढ़े वाला मुखमंतरी आ चंदा मांग के वोट लड़े वाला लोगो खतम हो गइल। पहिले मुखिया लोग पैदल भा साइकिल से गांवे-गांवे घूमे लोग। अब त मुखिया चुनाते फटफटिया (बाइक) आ साल बीतते चरपहिया गाड़ी मुखियवा कीन ले तारे सन। एमएलए-एमपी के त एकनी से ऊपर के लोग ह। सुने में आवेला कि कवनो पाटी से टिकट खातिर ऊ लोग पहिले लाख-करोड़ में खर्चा करेला। चुनाव लड़े में खरचा पांड़े बाबा एक दिन बतावत रहनी कि पांच-दस करोड़ होता। अब रउरे बताईं मलिकार कि जेतना तनखाह एह लोग के मिलेला, ओह से बेसी त ई लोग वोट में खरच करेला। एकर माने इहे नू भइल मलिकार कि रउरा-हमरा से किसिम-किसिम के टेक्स वसूल के ई लूटत होई लोग। अंवाट-बंवाट में पाती लमहर हो गइल मलिकार। बाकी अगिला पाती में।

राउरे, मलिकाइन

The 21st century gurukul
Over 80 acres of campus | One of the largest in Dehradun
THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
The Indian Public School adheres to the modern education system while incorporating the traditional gurukul system.
Over 80 Acres of Campus | Student-Teacher Ratio of 15:1
65,000 Sq. Ft. Academic Block | State-of-the-Art Computer, Language and Design Labs | Separate Art & Music Block for Visual and Performing Arts | World-Class Sporting Facilities
For more information/campus tour, contact:
ADMISSIONS OPEN
www.indianpublicschool.com
Kindergarten to XII | Co-educational | Fully residential | National Curriculum Framework